प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

मासिक

पौष-माघ, विक्रम संवत् 2081 (जनवरी-2025)

पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

शक्ति और नारीत्व की प्रतिमूर्ति

रानी दुर्गावती

प्रेरणा विमर्श –2024 की झलकियां

नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रेरणा विमर्श - 2024 का आयोजन किया गया। इस वर्ष यह पांचवा प्रेरणा विमर्श था जो पंच परिवर्तन पर केन्द्रित था। विमर्श का प्रारंभ नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ के साथ 22 नवम्बर 2024 को हुआ। इस 108 कुण्डीय भव्य यज्ञ में नोएडा महानगर की 108 बस्तियों से 1000 से अधिक माताओं-बहनों ने प्रतिभाग किया। यज्ञ के पश्चात प्रेरणा विमर्श - 2024 पंच परिवर्तन के आयामों 'स्व', सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण और नागरिक कर्तव्य तथा पिछले चार विमर्शों की झलकियों पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया गया। उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि डॉ. प्रवीण विद्यालंकार, मुख्य वक्ता महिला आयोग उत्तर प्रदेश की उपाध्यक्ष अर्पणा यादव और अध्यक्ष सामाजिक कार्यकर्ता रेशु भाटिया थीं। इस अवसर पर लोकमाता अहिल्याबाई होलकर को उनकी त्रि-शताब्दी वर्ष पर श्रद्धांजलि भी दी गयी। तथा उन्हीं पर केन्द्रित प्रेरणा विचार पत्रिका के विशेषांक का विमोचन भी किया गया। प्रेरणा विमर्श - 2024 का यह आयोजन नोएडा के सेक्टर 12 स्थित सरस्वती शिशु मंदिर के प्रांगण में हुआ।

समापन समारोह

प्रेरणा विमर्श - 2024 के अंतिम दिन 24 नवम्बर को समापन सत्र में नगर के प्रबुद्ध वर्ग, शिक्षार्थियों एवं जागरूक जनमानस ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। प्रेरणा विमर्श - 2024 के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या ने कहा कि भारत की भूमि साधु-संतों और तपस्वियों की भूमि है। पूरी सृष्टि के निर्माण का आधार पंच महाभूत हैं। भारतीय चिंतन में संस्कृति पोषित होती है। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि भारतीय समाज में सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें रिश्तों की समझ होनी चाहिए। हर रिश्ते की एक विशेषता और उसके लिए कर्तव्य होते हैं। परिवार की एकता, जीवन शैली, व्यवस्था, पर्यावरण और आर्थिक व्यवस्था आदि सभी एक दूसरे से जुड़े हैं। इन सबको एक दूसरे से मिलाकर देखने की आवश्यकता है। हमें पंच परिवर्तन के सभी पांच विषयों को समाज के सभी वर्गों तक ले जाना चाहिए।

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 01

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
डॉ. प्रताप निर्भय सिंह

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

राष्ट्रीय गौरव की प्रतिमूर्ति : रानी दुर्गावती-05

आपदा में देवदूत बन जाते हैं स्वयंसेवक -22

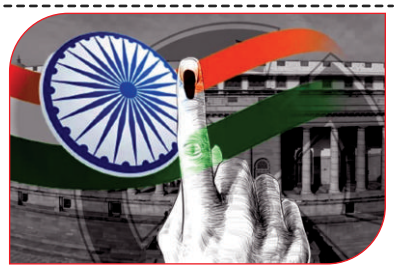

एक राष्ट्र एक चुनाव - 24

बांग्लादेशी हिन्दुओं की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव आवश्यक- 28

मुगलों के विरुद्ध संघर्ष की अमर गाथा.....07

रानी दुर्गावती : नारीत्व और शक्ति का अद्वितीय स्वरूप.....08

इस्लामी आक्रमण : भारतीय नारियों के दुर्धर्ष संघर्षों का कालखण्ड.....10

इस्लामिक आक्रांताओं के सामने ढाल बनीं दुर्गावती.....12

स्व, समरसता और नारी सशक्तीकरण की प्रेरणापुंज.....14

रानी दुर्गावती : साहस और त्याग की प्रतिमूर्ति.....16

भारतीय वीरांगनाओं का शौर्यपूर्ण बलिदान.....18

संघ की पहली अग्नि परीक्षा.....20

पंच परिवर्तन के प्रेरक.....23

संघ के विरुद्ध गांधी हत्या का राग क्यों अलापती रहती है कांग्रेस?.....26

मकर संक्रांति : प्रकृति और परंपरा का समन्वय.....30

प्रेरणा विमर्श -2024 की झलकियां.....32

डिजिटल मार्केटिंग में स्वर्णिम भविष्य.....34

राष्ट्र नायिका, जिनका ऋण चुकाना शेष है ...

एक नारी शासक के रुप में उन्होंने ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में अपने शासन का कुशलतापूर्ण संचालन किया जब इस्लामी आक्रमणकारी धीरे-धीरे भारत के भूभाग पर अपना कब्जा कर रहे थे और भारत के सांस्कृतिक मानबिंदुओं को नष्ट कर रहे थे। धर्म-संस्कृति और स्वत्व की रक्षा करते हुए रानी दुर्गावती ने इन आक्रांताओं को कड़ी चुनौती दी और शत्रुओं से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया।

राष्ट्र आजादी का अमृत उत्सव मना रहा है। हम सब अपने गौरवमयी अतीत से प्रेरणा लेकर नए भारत के निर्माण को दृढ़ संकल्पित हैं। देश का निर्माण ऊर्जावान और चरित्रवान युवाओं से होता है। इस काल में यह हमारा दायित्व है कि अपने देश के प्राचीन गौरव, गुमनाम नायक-नायिकाओं के जीवन को हम अपनी युवा पीढ़ी के सामने रखें। यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि स्वाधीनता के बाद देश की सत्ता संभालने वालों ने तथाकथित स्वाधीनता तो स्वीकार कर ली लेकिन 'स्व' का अर्थ नहीं पहचाना। यह वह 'स्व' है जिसके लिए हमारे अनगिनत वीरों और वीरांगनाओं ने अपना संपूर्ण जीवन न केवल समर्पित किया अपितु जब-जब विदेशी आक्रांताओं द्वारा हमारे 'स्व' को अघात पहुंचाने का कुत्सित प्रयास किया गया तब-तब उन्होंने अपने शौर्य और पराक्रम से उनका कड़ा प्रतिकार किया और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने से भी वे पीछे नहीं हटे। भारत के इतिहास में ऐसी अनेक हुतात्माएं है जिनका जीवन राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए आज की पीढ़ी को नई ऊर्जा और प्रेरणा देने वाला है। देश के जागरुक नागरिक होने के नाते से यह हम सबका राष्ट्रीय कर्तव्य बनता है कि हम अपने राष्ट्र के ऐतिहासिक नायक-नायिकाओं को अपनी पीढ़ी के मानस पटल से विस्मृत न होने दें, नई पीढ़ी को उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से परिचित कराएं। इस अंक में हम देश की एक ऐसी ही विभूति से आपका परिचय करायेंगे। वह महान विभूति थीं मध्य भारत स्थित गढ़ कटंगा साम्राज्य की रानी दुर्गावती। देश उनकी 500 वीं जयंती मना रहा है किन्तु आज भी हमारे पास उनके जीवन से सम्बंधित पर्याप्त जानकारी का अभाव है। उनके जीवन के अनेक ऐसे अनछुए पहलू हैं जिन पर शोध किये जाने की महती आवश्यकता है। रानी दुर्गावती भारत की शास्त्र और शस्त्र परम्परा में पली बढ़ी एक ऐसी नायिका थीं जिन्होंने भारतीय सनातन जीवन मूल्यों को धारण करते हुए अपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ कुशल प्रशासनिक प्रबंधन, सामाजिक समरसता, नारी सशक्तीकरण, जल-प्रबंधन, धार्मिक शिक्षा, कृषि उन्नयन, सांस्कृतिक उत्थान एवं राज्य के आर्थिक तंत्र की प्रगति में विशेष योगदान दिया। एक नारी शासक के रुप में उन्होंने ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में अपने शासन का कुशलतापूर्ण संचालन किया जब इस्लामी आक्रमणकारी धीरे-धीरे भारत के भूभाग पर अपना कब्जा कर रहे थे और भारत के सांस्कृतिक मानबिंदुओं को नष्ट कर रहे थे। धर्म-संस्कृति और स्वत्व की रक्षा करते हुए रानी दुर्गावती ने इन आक्रांताओं को कड़ी चुनौती दी और शत्रुओं से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया जो आज भी इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। पत्रिका का वर्तमान अंक रानी दुर्गावती को समर्पित है। महात्मा गांधी की हत्या को लेकर संघ को बदनाम करने का कुत्सित षड्यंत्र पिछले अनेक दशकों से किया जाता रहा है, इस षड्यंत्र पर प्रकाश डालता हुआ लेख संघ के प्रति मानसिक विद्वेष रखने वालों का पर्दाफाश करता है। बांग्लादेश में हिन्दुओं के साथ होने वाले उत्पीड़न और अत्याचार की ओर विश्व समुदाय के ध्यानाकर्षण की आवश्यकता का उल्लेख करते हुए एक लेख भी इस अंक में रखा गया है जो पूरे विश्व समुदाय के लिए खतरा बनते जा रहे इस्लामिक कट्टरपंथ से सचेत रहने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। आशा है कि यह अंक आप सभी के लिए रोचक एवं बोधपूर्ण होगा।

राष्ट्रीय गौरव की प्रतिमूर्ति : रानी दुर्गावती

डॉ. सुदर्शन चक्रधारी
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विवि., लखनऊ

महारानी दुर्गावती ने समर्पण के स्थान पर स्वाभिमानपूर्वक संघर्ष को प्राथमिकता दी तथा परामर्श देने वाले सरदार आधार सिंह को संबोधित किया कि अकबर के हरम में हिन्दू राजकुमारियों का जाना इस तेजस्वी जाति पर कितना बड़ा कलंक है?

भारत भूमि प्राचीन काल से ही अदम्य साहस, नैतिक मूल्यों, ज्ञान-मीमांसा, न्यायप्रियता तथा वसुधैव-कुटुंबकम् जैसे विचारों से पोषित रही है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय शासकों ने कभी भी भारतीय उपमहाद्वीप के परे जाकर तलवार के बल पर साम्राज्य विस्तार की कल्पना नहीं की, वरन् सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की कल्पना दक्षिण-पूर्व एशिया के संदर्भ में हमें अवश्य दृष्टिगत होती है। यद्यपि प्राचीन काल में भारत भूमि पर शक, कुषाण, हूण आदि आक्रांताओं के रूप में आए परंतु समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा तथा संस्कृति के प्रति नतमस्तक होकर उन्होंने समय के साथ स्वयं को भारत की संस्कृति धारा में समाहित किया और इसी संस्कृति के अभिन्न अंग बन गए। परंतु अरब में विध्वंसकारी इस्लामिक राज्य की स्थापना के उपरांत 8वीं शताब्दी से अनवरत भारत में इस्लामिक राज्य की स्थापना के उद्देश्य से जंगली और बर्बर मुस्लिम कौम के आक्रमणों का दौर प्रारंभ हुआ। भारत के महान योद्धाओं एवं भारतीय जनमानस द्वारा इन मुस्लिम आक्रान्ताओं का निरंतर प्रतिरोध किया गया। इस प्रतिरोध में भारतीय राजाओं तथा आम जनमानस ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर राष्ट्र की अस्मिता और संस्कृति को जीवित रखने का सार्थक प्रयास किया। यही कारण है कि 8वीं शताब्दी से आरंभ होकर अंग्रेजों के भारत के उपनिवेश बनाने के पूर्व तक अर्थात् लगभग 900–1000 वर्ष तक भारतवासियों ने मुस्लिम आक्रान्ताओं का प्रतिरोध करते हुए अपने सांस्कृतिक अस्तित्व को बचाए रखने में सफलता प्राप्त की। इतिहास के पन्ने उलट कर देखे जाएं तो संभवतः भारत विश्व का एकमात्र ऐसा राष्ट्र होगा, जिसने बर्बर मुस्लिम आक्रान्ताओं से अपनी संस्कृति को बचाए रखा। यह भारतीयों के आत्म-गौरव, राष्ट्रीय-चिंतन तथा 'स्व' बोध की प्रबल समझ को स्पष्टतः इंगित करता है। राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के प्रति ऐसी ही भावनाओं से ओत-प्रोत, अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति, मुगल आक्रान्ताओं के मंसूबों पर पानी फेरने वाली मातृशक्ति है महारानी दुर्गावती।

भारतभूमि में प्राचीन काल से ही मातृशक्ति को अग्रिम पंक्ति में रखते हुए - 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' का भाव जागृत रहा है तथा अनेक नारी विभूतियों ने अपने दैदीप्यमान ज्ञान तथा पराक्रम के बल पर स्वयं को प्रतिष्ठित किया है। वे चाहे अपाला, घोषा, गार्गी रही हों या सीता, सावित्री, अनुसुइया हों या अवन्तीबाई, लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होलकर ही क्यों न हों। यही कारण है कि आज भी इन नारी विभूतियों का नाम मात्र लेने से हमारे मन में ओज का संचार होने लगता है। इसी परंपरा में महारानी दुर्गावती का नाम बड़ी ही श्रद्धा से लिया जाता है। महारानी दुर्गावती सोलहवीं शताब्दी में 52 गढ़ों वाले गढ़ा मंडल परिक्षेत्र की महारानी थीं। यह राज्य वर्तमान मध्य प्रदेश के जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, भोपाल, सागर, दामोह तथा छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था। वे कालिंजर के

प्रसिद्ध राजा कीरत सिंह चंदेल (जो कीर्ति वर्मन/शालिवाहन नाम से भी प्रसिद्ध थे) की पुत्री तथा गोंड राजा दलपत शाह की पत्नी थीं। वह बचपन से ही मुस्लिम आक्रान्ताओं को सीमा से खदेड़ने तथा पूर्वजों की पौरुष गाथा का यशगान सुन पली-बढ़ी इसलिए वह अपने स्वाभिमान व आत्मगौरव की रक्षा में भला पीछे कैसे रहतीं? यही कारण था कि महारानी दुर्गावती ने बचपन से ही अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त करते हुए अपने को एक कुशल योद्धा एवं प्रशासिका के रूप में विकसित किया था। युद्धभूमि पर उनके द्वारा दिखाए गए शौर्य को आज भी बुंदेलखंड तथा विंध्यक्षेत्र के लोकगीतों व कहानियों में सुना जा सकता है। महारानी दुर्गावती की शौर्य गाथा को अनेक लेखकों ने लिपिबद्ध किया है, एक बात जो सभी की लेखनी में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, वह है महारानी दुर्गावती का शौर्य, जनहित के कार्य, स्वाभिमान, राष्ट्रीय चेतना, प्रतिरोध तथा आकाश सा विशाल उनका मनोबल।

अकबर के शासनकाल में जब अधिकतर राजा सहर्ष अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु उसकी अधीनता स्वीकार करने में रंच-मात्र भी संकोच नहीं कर रहे थे। उस समय अपने साहस और सामर्थ्य के बल पर शौर्य व वीरता से ओत-प्रोत महारानी दुर्गावती ने अपने पिता के हत्यारे मुगल आक्रान्ता अकबर से संघर्ष करना अपना परम कर्तव्य समझा। उस समय की परिस्थितियों को भांपते हुए उनके सरदार आधार सिंह ने रानी को अकबर से संधि करने का परामर्श भी दिया, किन्तु रानी ने उनके आग्रह को यह कहते हुए मना कर दिया कि दुर्गावती जीवित अवस्था में किसी के अधीन नहीं हो सकती। रानी ने समर्पण के स्थान पर स्वाभिमानपूर्वक संघर्ष को प्राथमिकता दी तथा परामर्श देने वाले सरदार आधार सिंह को संबोधित कर कहा था कि "अकबर के हरम में हिन्दू राजकुमारियों का जाना इस तेजस्वी जाति पर कितना बड़ा कलंक है? पद्मिनी के देश की नारियां जौहर के स्थान पर नरक का वरण क्यों कर रही हैं? इतिहास जब भी उत्तर मांगेगा, यह समाज अपना सिर नीचा कर लेगा। जिस समाज में सीता जैसे पावन नाम की माला जपी जाती हो, उस समाज का इतना पतन कैसे हो गया? आधार सिंह, आप हमारी सेना के आधार हैं। दुर्गावती के शरीर के हजारों टुकडें जमीन पर बिखर जाएं, किन्तु दुर्गावती कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं करेगी।" उन्होंने आगे फिर कहा कि "रावण जैसे अहंकारी, धर्मभ्रष्ट से माँ सीता ने कहा था कि दशकंधर, तेरे पास तलवार है, तू मेरा सिर काट सकता है। तू इतना बहादुर है, किन्तु मैं भूमिजा हूं। धरती की लाज के आवरण से पैदा हुई हूं, मैं धरती की मर्यादा का मृत्युपर्यंत पालन करूंगी। वह देवी थीं, मैं अनुचारी हूं, किन्तु अकबर के धर्म घृणा के परिवर्धन का हिस्सा कदापि नहीं हो सकती। मैं युद्ध रचूंगी, सेना तैयार है।" इस प्रकार रानी के वचन सुन आधार सिंह ने संधि हेतु दिए गए अपने प्रस्ताव के लिए रानी से क्षमा मांग युद्ध की तैयारी प्रारंभ कर दी थी।

श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारकर "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" के बोध से आगे बढ़ने वाली रानी दुर्गावती आत्मगौरव व देशाभिमान से परिपूर्ण हो रणचंडी बन युद्ध के मैदान में कूद पड़ीं। पूर्व में मुस्लिम आक्रमणकारी बाज बहादुर खान को भी रानी ने कई बार पराजित किया था तथा युद्ध में अकबर की सेना को भी कई बार खदेड़ा। अकबर के सेनानायक आसफ खां ने रानी के सहसेना प्रमुख बदन सिंह को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। मुगलों की बड़ी सेना से युद्ध करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुईं। अपने अदम्य साहस के बल पर महारानी दुर्गावती ने अपनी संस्कृति, स्वाभिमान और देशनिष्ठा पर समझौते का दाग नहीं लगने दिया। इतिहासकार विसेंट स्मिथ का मत है कि, "अकबर द्वारा दुर्गावती जैसी सच्चरित्र और भली रानी पर हुआ यह आक्रमण बिल्कुल न्यायसंगत नहीं।"

श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतार कर 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' अर्थात् तुम्हारा अधिकार सिर्फ कर्म करने में है, कर्म के फल में नहीं... के बोध से आगे बढ़ने वाली, आत्मगौरव व देशाभिमान से परिपूर्ण, रणचंडी का रूप धारण कर रानी दुर्गावती युद्ध के मैदान में कूद पड़ीं।

महारानी दुर्गावती के बारे में विभिन्न साहित्यिक तथा अभिलेखीय स्रोतों से जानकारी प्राप्त होती है। महारानी दुर्गावती एक प्रजापालक शासिका थीं, जिनके अंदर माँ जैसी करुणा थी तथा जो समरभूमि में काली स्वरूपा थीं। महारानी दुर्गावती ने अपने बलिदान से देश का मस्तक उन्नत किया है। केवल गढ़ा मण्डल ही नहीं, बल्कि समस्त भारतवासी महारानी दुर्गावती के बलिदान का पुण्य स्मरण रखते हुए अपनी आगामी पीढ़ी को उनके बलिदान की स्वर्णिम गाथा सुनाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान केशव दीक्षित ने महारानी दुर्गावती के शासन काल को स्वर्णिम काल के रूप में विवेचित किया है जो इस प्रकार है-

उर्वरा सर्वतो भूमिः मध्यतो नर्मदा नदी।
विज्ञा दुर्गावती राज्ञी, गढ़ाराज्ये त्रयोगुणाः॥

अर्थात् रानी दुर्गावती के शासनकाल में चारों ओर उपजाऊ भूमि है, बीच में नर्मदा नदी है और विदुषी दुर्गावती वहां की रानी हैं।

रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती पर सम्पूर्ण देश श्रद्धा भाव से उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है और साथ ही 'स्व' बोध का भाव अन्तःमन में धारण कर राष्ट्र निर्माण में अपनी आहुति देने के लिए तत्पर है।

मुगलों के विरुद्ध संघर्ष की अमर गाथा

अरुण जुयाल
वरिष्ठ पत्रकार

रानी दुर्गावती की वीरता की गाथा का विवरण तत्कालीन फारसी स्रोत 'तारीख-ए-फरिश्ता' में भी मिलता है जिसके अनुसार रानी दुर्गावती ने मालवा के शासक बाज बहादुर खान को बुरी तरह से परास्त कर अपनी राज्य की सीमाओं से खदेड़ दिया था।

भारत का इतिहास ऐसी वीरांगनाओं की गाथाओं से भरा हुआ है जिन्होंने मुगलों और अन्य विदेशी आंक्राताओं की विस्तारवादी नीतियों का मुंहतोड़ जवाब दिया। अपनी संस्कृति और स्वधर्म की रक्षा की, अपनी प्रजा के कल्याण के लिए लोक नीतियों का प्रचलन किया। ऐसी ही एक वीरांगना थीं रानी दुर्गावती। माता-पिता ने उनका नाम देवी दुर्गा के नाम पर रखा था और उन्होंने भी अपनी प्रंचड वीरता और पराक्रम से अपने नाम को इतिहास में सिद्ध कर दिखाया।

5 अक्टूबर 1524 को रानी दुर्गावती का जन्म तत्कालीन मध्य भारत के अभेद्य किले में से एक बाँदा के कालिंजर दुर्ग के चंदेल वंशी राजा कीर्ति वर्मन के घर हुआ था। जब वे 18 वर्ष की हो गयी तब उनका विवाह गढ़ा-कटंगा राज्य के गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह से संपन्न हुआ।

'लोकप्रिय और दूरदर्शी शासिका : दुर्भाग्य से विवाह के कुछ वर्षों पश्चात् ही वर्ष 1548 में राजा दलपत शाह की मृत्यु हो गयी जिसके बाद उनके बाल्यावस्था के पुत्र वीर नारायण सिंह को राज सिंहासन पर बैठाया गया, उनकी ओर से रानी दुर्गावती ने शासन की बागडोर अपने हाथ में लेते हुए कुशल राज-व्यवस्था की एक अनूठी मिसाल छोड़ी। उन्होंने प्रजा के लिए रानीताल, चेरीताल और आधारताल जैसे जलाशयों का निर्माण कर प्रजा की पेयजल संबंधी समस्या का बड़े स्तर पर समाधान किया और प्राचीन भारतीय जल संरक्षण प्रणाली को भी समृद्ध किया। रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में भारतीय ज्ञान परम्परा को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। उनके दूरदर्शी होने का पता इस तथ्य से भी चलता है कि उन्होंने प्राच्य विद्या के विद्वान आचार्य विट्ठलनाथ को गढ़ा में पुष्टिमार्ग पंथ का शिक्षण केंद्र स्थापित करने की न केवल अनुमति दी अपितु उसके संवर्धन हेतु पूरा सहयोग भी किया।

मुगलों के दांत खट्टे कर दिए : एक राज्य के लिए बाहरी शत्रुओं से रक्षा राज-व्यवस्था का प्रमुख अंग है। इस दृष्टि से राजा दलपत शाह की मृत्यु के पश्चात् कोई भी शत्रु उनके राज्य को कमजोर समझ अपनी कुदृष्टि न डाल सके इसके लिए रानी दुर्गावती ने निरंतर अपनी सीमाओं को सुदृढ़ करने का कार्य जारी रखा। राज्य को सशक्त करने हेतु उन्होंने एक शक्तिशाली और प्रभावी सेना का निर्माण भी किया जिसमें 20 हजार अश्वारोही, एक हजार युद्ध में कुशल हाथी और पैदल सैनिकों की बड़ी टुकड़ी सम्मिलित थी।

रानी दुर्गावती की वीरता की गाथा का विवरण तत्कालीन फारसी स्रोत 'तारीख-ए-फरिश्ता' में भी मिलता है जिसके अनुसार रानी दुर्गावती ने मालवा के शासक बाज बहादुर खान को बुरी तरह से परास्त कर अपनी राज्य की सीमाओं से खदेड़ दिया था। वर्ष 1562 में तत्कालीन मुगल आक्रमणकारी अकबर ने मालवा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया था। वहीं, रीवा पर उसके सेनापति आसफ खान ने कब्जा कर लिया था।

मुगलों की बुरी नजर गोंडवाना पर भी थी, रीवा और मालवा दोनों की सीमाएं गोंडवाना की सीमाओं को छूती थी। वर्ष 1564 में आसफ खान ने एक बार फिर रानी दुर्गावती की वीरता को चुनौती देते हुए उन पर आक्रमण किया। लेकिन रानी दुर्गावती भी अलग ही मिट्टी की बनी थीं, वो रणभूमि में अपने हाथी पर बेटे के साथ सवार होकर पहुंची। शौर्य और पराक्रम से लड़ते हुए रानी दुर्गावती कई तीर लगने के बाद बुरी तरह से घायल हो गईं लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। जब उन्हें लगा कि वो शायद बच न सकेंगी तो उन्होंने मुगलों के हाथों बंदी बनने और मरने की अपेक्षा अपने एक सिपहसालार को उन्हें मारने का आदेश दिया, लेकिन सिपहसालार ने उनका यह आदेश स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने प्राणों की चिंता न करते हुए वीरता से अपनी कटार खुद ही सीने में उतार ली और वीरगति को प्राप्त हुईं। शत्रु के हाथों अपमानित होने की अपेक्षा युद्ध भूमि में आत्म-सम्मान के साथ प्राणोत्सर्ग करने वाली ऐसी महान वीरांगनाओं ने भारत भूमि को विश्व इतिहास में अलंकृत किया है। रानी दुर्गावती की यह अमिट वीरगाथा भारत की पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

रानी दुर्गावती : नारीत्व और शक्ति का अद्वितीय स्वरूप

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

सृष्टि का विस्तार नारीत्व से हुआ है। बिन्दु से विराट होने की क्षमता नारी में है। संवेदना की धारा पर वह संपूर्ण समर्पण कर देती है तो स्वत्व की रक्षा के लिए नारी का रणचंडी स्वरूप भी विख्यात है। गोंडवाना की रानी दुर्गावती ऐसी ही थीं। वे आदर्श पुत्री, संस्कारवान वधु, समर्पित पत्नी, ममतामयी माता, प्रजावत्सल शासिका और रणक्षेत्र में साक्षात् रणचंडी थीं। जिस काल में वे जन्मी उस काल में संपूर्ण भारत मुस्लिम आक्रान्ताओं से त्रस्त था। उनका जीवन मायके और ससुराल दोनों घरों में युद्धों के बीच ही बीता। इसलिए आक्रमणों के बीच अडिगता एवं युद्ध कौशल उनकी रग-रग में था। मुगल आक्रांता बाबर और चित्तौड़ के राणा सांगा के बीच हुए युद्ध में धर्म रक्षा के लिए कालिंजर की सेना भी राणा की सहायता के लिए गई थी। परिवार के भीतर शौर्य, स्वाभिमान और समन्वय के जिस वातावरण में रानी दुर्गावती ने आंखें खोली थी उसके संस्कार जीवनभर उनमें प्रतिबिंबित होते रहे।

गोंडवाना की रानी के रूप में उनका जीवन शौर्य और वीरता का उदाहरण तो है ही, विवाह से पूर्व कालिंजर में भी ऐसी अनेक घटनाएं इतिहास में दर्ज हैं जो उनकी वीरता और रणनीति का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। कालिंजर किला उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में है। रानी दुर्गावती इसी कालिंजर के चंदेल वंशी

रानी दुर्गावती ऐसी ही थीं। वे आदर्श पुत्री, संस्कारवान वधु, समर्पित पत्नी, ममतामयी माता, प्रजावत्सल शासिका और रणक्षेत्र में साक्षात् रणचंडी थीं। जिस काल में वे जन्मी उस काल में संपूर्ण भारत मुस्लिम आक्रान्ताओं से त्रस्त था। उनका जीवन मायके और ससुराल दोनों घरों में युद्धों के बीच ही बीता। इसलिए आक्रमणों के बीच अडिगता एवं युद्ध कौशल उनकी रग-रग में था।

राजा कीर्ति वर्मन की पुत्री थीं, उनकी माता चित्तौड़ के विख्यात योद्धा राणा सांगा की बहन थीं। विक्रम संवत् के अनुसार नवरात्र की अष्टमी के दिन उनका जन्म होने से उनका नाम दुर्गावती रखा गया। उन्हें शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा दी गयी थी। भारतीय परंपरा में आत्मरक्षा के लिए बेटियां भी शस्त्र संचालन सीखती थीं। जब वे मात्र ढाई साल की थीं तब मुस्लिम लुटेरे बाबर का आक्रमण कालिंजर पर हुआ था।

भारतीय इतिहास का वह काल-खंड विषमताओं से भरा था। विषमताओं की यह शुरुआत 712 ईस्वी में सिंध पर मुस्लिम लुटेरों के आक्रमण के साथ ही शुरु हो गई थी। निरन्तर आक्रमणों और लूट से भारत की धरती आक्रांत हो गई थी। भारत में अनादिकाल से पुत्र-पुत्रियों दोनों को शास्त्र और शस्त्र की शिक्षा देने की परंपरा रही है। ऋग्वेद में ऋषिकाओं के नाम और युद्ध में रानी कैकेयी की उपस्थिति के प्रमाण हैं। भारत की इसी परंपरा के निर्वहन करने और तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर पिता कीर्ति वर्मन ने अपनी पुत्री दुर्गावती की शिक्षा के लिए काशी से शास्त्री बुलाए और कुशल योद्धाओं द्वारा शस्त्र शिक्षा भी आरंभ की। किशोर वय तक आते-आते राजकुमारी दुर्गावती सभी शिक्षाओं में निपुण हो गई थीं।

एक दिन की घटना है, किशोर दुर्गावती अपनी टोली के साथ वन में शस्त्र अभ्यास कर रहीं थीं। तभी उन्होंने देखा कि एक बालिका पर तेंदुए ने हमला कर दिया। दुर्गावती तुरन्त तलवार लेकर तेंदुए पर टूट पड़ीं, घायल होकर तेंदुआ भाग गया। वह बालिका नौ वर्षीय वनवासी कन्या थी। वे घायल बालिका को अपने साथ महल में लाईं, उसका उपचार कराया, उसका नाम कमलावती रखा। यह बालिका जीवन भर उनकी बहन की भांति उनके साथ रही। अनेक इतिहासकारों ने कमलावती को उनकी बहन ही लिखा है। 1542 में उनका विवाह गोंडवाना के राजा से हो गया।

रानी की रणनीति से ही मारा गया था आक्रमणकारी शेरशाह सूरी : यह घटना 1545 की है। रानी होली उत्सव के लिए गोंडवाना से अपने मायके कालिंजर आई थीं। तभी शेरशाह सूरी का आक्रमण कालिंजर पर हुआ। शेरशाह के पास तोपखाना था, उसका मुकाबला देशी शासक नहीं कर पाते थे, यही अनेक हिन्दू राजाओं पर उसकी जीत का रहस्य था। उसने कालिंजर पर घेरा डाल दिया। कालिंजर किले के द्वार बंद कर लिए गए। शेरशाह का तोपखाना गरजा तो सही पर किले की दीवारों को अधिक नुकसान न पहुंचा सका।

अंत में शेरशाह ने रसद का मार्ग रोक दिया। किले के भीतर रसद की समस्या पैदा हो गयी। शेरशाह को सूचना थी कि दुर्गावती यहीं हैं। उसने समर्पण का संदेश भिजवाया और पूरे रनिवास एवं राजकोष के साथ राजा को शीश झुकाकर आने की शर्त रखी। चंदेल राजा ने समर्पण से इंकार कर दिया। घेरा लगभग एक माह पड़ा रहा। शेरशाह ने तोपों से हमला करने का आदेश दिया। किले के भीतर कालिंजर के वीरों ने साका (निर्णायक युद्ध) करने और वीरांगनाओ ने जौहर की तैयारियां कर ली। माँ किसी भी प्रकार अपनी विवाहित बेटी दुर्गावती को सुरक्षित निकालकर गोंडवाना भेजना चाहती थीं। लेकिन वीरांगना दुर्गावती इस संकट में अपने माता-पिता को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थीं। इस विषम परिस्थिति में रानी दुर्गावती को एक मार्ग सूझा। उन्होंने किले की वीरांगनाओं के साथ मिलकर एक योजना बनाई और किले के बुर्ज पर आकर समझौते का संकेत दिया। शेरशाह की ओर से भी अनुकूल उत्तर मिलने के बाद रानी ने संदेश भेजा कि वे स्वयं भी समर्पण के लिए तैयार हैं लेकिन शर्त यह है कि शेरशाह को उनसे विवाह करना होगा। कालिंजर किला अजेय था। घेरा पड़े लगभग डेढ़ माह होने आ गया था। इसलिए परेशान शेरशाह ने संदेश स्वीकार कर लिया और तोपों की गोलाबारी रोक दी गई। वस्तुतः वीरांगना दुर्गावती चाहती थीं कि शेरशाह किले पर तैनात तोपों की सीमा में आ जाए। उन्होंने समर्पण की तैयारी के समय के बहाने अपनी वीरांगना टोली के साथ किले की दीवारों के नीचे तैयारी आरंभ कर दी। किले में बाजे बजने लगे और शेरशाह को कूटनीति के चलते शगुन में कुछ भेंट भी भेज दी गई मानों वीरांगना दुर्गावती शेरशाह से अपने दूसरे विवाह के लिए तैयार हो रही हों। तैयारी के बाद रानी ने शेरशाह को किले में आमंत्रण भेजा। शेरशाह को विश्वास हो सके इसके लिए बलिदानी वीरांगनाओ की एक टोली भेजी गई जो विवाह के लोकगीतों के साथ शेरशाह को किले की ओर लाने लगीं। शेरशाह वीरांगनाओं की इस टोली के साथ जैसे ही किले की तोप की सीमा में आया। कालिंजर के किले की तोप गरज उठी। शेरशाह धोखा-धोखा कहकर उल्टा भागा लेकिन भाग न पाया, एक तोप का गोला उसे लगा और वह उसी समय मारा गया। इस प्रकार वीरांगना दुर्गावती की रणनीति से ही क्रूर हमलावर शेरशाह सूरी मारा गया। हालांकि कुछ इतिहासकारों ने शेरशाह को खुद की तोप के गोले से मरना बताया है जो तर्कसंगत नहीं है। युद्ध के बाद रानी अपनी ससुराल गोंडवाना आ गयीं। गोंडवाना साम्राज्य में आज के जबलपुर, भोपाल, रायसेन, सीहोर और होशंगाबाद जिले आते थे।

एक सामान्य वनवासी बालिका को अपना जीवन संकट में डालकर बचाना उनकी मानवीय संवेदना का उदाहरण है। उस बालिका को अपनी बहन की भांति साथ रखना सामाजिक समरसता का उदाहरण है। वे स्वयं चंदेलवंशी क्षत्रिय राजा की पुत्री थीं और उनका विवाह गोंडवाना के वनवासी राजकुल में हुआ था। अर्थात् भारतीय समाज व्यवस्था में वनवासी और नगरवासी अलग-अलग नहीं थे।

दुर्भाग्य से चार वर्ष बाद ही उनके पति की मृत्यु हो गयी। उन्होंने अपने बाल्यावस्था के पुत्र वीर नारायण सिंह को सिंहासन पर बैठाया और राजकाज संभालने लगीं। रानी ने गोंडवाना पर हुए हर आक्रमणकारी को करारा उत्तर दिया। उन्होंने अपने जीवन में छोटे-बड़े कुल बावन युद्ध देखे। मुगल आक्रान्ता अकबर के सेनापति आसफ खां ने उनका राज्य हड़पने के लिए उन पर आक्रमण किया फिर पीछे हटकर रानी को भेंट भेजकर कुटिल समझौते के लिए आमंत्रित किया। रानी उसकी कुटिलता को भांप नहीं सकी, उसका आमंत्रण स्वीकार कर जब वे उसके शिविर की ओर जा रही थीं तब योजना के अनुसार पेड़ पर छिपे शत्रु धनुषधारी ने उन्हें धोखे से घायल कर दिया। आसफ खां रानी को जीवित पकड़ना चाहता था किन्तु वीरांगना शत्रु के हाथ जीवित नहीं आना चाहती थीं इसलिए उन्होंने स्वधर्म रक्षार्थ अपनी ही कटार से अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। यह 24 जून 1564 का दिन था।

एक सामान्य वनवासी बालिका के लिए अपना जीवन संकट में डालकर उसे बचाना उनकी मानवीय संवेदना का उदाहरण है। उस बालिका को अपनी बहन की भांति साथ रखना सामाजिक समरसता का उदाहरण है। वे स्वयं चंदेलवंशी क्षत्रिय राजा की पुत्री थीं और उनका विवाह गोंडवाना के वनवासी राजकुल में हुआ था। अर्थात् भारतीय समाज व्यवस्था में वनवासी और नगरवासी अलग-अलग नहीं थे। वे कुशल प्रशासिका भी थीं। निरन्तर युद्धरत रहने के बावजूद उन्होंने अपने पूरे राज्य क्षेत्र में सौ से अधिक जलाशय बनवाए, कृषि के विकास पर ध्यान दिया, आक्रान्ताओं द्वारा विध्वंस किए गए मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया। इसके साथ काशी से आचार्यों को बुलाकर संस्कृत पाठशाला आरंभ की। यह रानी दुर्गावती द्वारा समाज शिक्षा और समाज जागरण परंपरा का निर्वहन ही था। आज भी गोंडवाना के केन्द्र जबलपुर को 'संस्कारधानी' कहा जाता है। ■

इस्लामी आक्रमण : भारतीय नारियों के दुर्धर्ष संघर्षों का कालखण्ड

शिवेश प्रताप
लोकनीति व संस्कृति के अध्येता एवं लेखक

अल-बरूनी और इब्नबतूता जैसे इतिहासकारों ने मुस्लिम आक्रमणों से हुई व्यापक तबाही का विवरण दिया है। इस दौर में मंदिरों को नष्ट किया गया, धन लूटा गया और हिन्दू महिलाओं-बच्चों को अकसर माल-ए-ग़नीमत के रूप में यौन गुलामों के रूप में अफगान बाजारों में बेचा जाता रहा।

भारत का मध्यकालीन इतिहास, आक्रमणों और संघर्षों की एक शृंखला है, विशेष रूप से जब इस्लामी लुटेरों ने उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस कालखंड में महत्वपूर्ण सामाजिक उथल-पुथल थी, जिसने विशेष रूप से हिन्दू समाज और महिलाओं की स्थिति और व्यवहार को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

प्रसिद्ध इतिहासकार विल ड्यूरेंट अपनी पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन' में इन इस्लामी आक्रमणों की हिंसा और महिलाओं पर उनके प्रभाव को भारतीय इतिहास का एक अंधकारमय अध्याय बताते हैं।

महिलाओं के प्रति इस्लामी मानसिकता : इस्लामिक शासन की नींव मुख्यतः इस्लामी परंपराओं पर आधारित थी। महिलाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में कई पहलू शामिल थे जैसे महिलाओं को संपत्ति के रूप में देखना। इस्लामी कानून (शरिया) में महिलाओं को पुरुषों की संपत्ति मानने की प्रवृत्ति थी। महमूद गजनी और तैमूर जैसे आक्रमणकारियों ने हजारों हिन्दू महिलाओं को दासी बनाकर मध्य एशिया और अन्य क्षेत्रों में भेजा। मुगल और सुल्तानों के दरबार में हरम की परंपरा थी। हरम में सैकड़ों गुलाम महिलाएं और उपपत्नियां होती थीं जिनका जीवन यौन दासियों के रूप में नारकीय होता था।

अल-बरूनी और इब्नबतूता जैसे इतिहासकारों ने इन आक्रमणों से हुई व्यापक तबाही का विवरण दिया है। मुस्लिम आक्रमण काल में मंदिरों को नष्ट किया गया, धन लूटा गया और हिन्दू महिलाओं-बच्चों को अकसर माल-ए-गनीमत के रूप में युद्ध बंदी बनाकर यौन गुलामों के रूप में अफगान बाजारों में बेचा जाता रहा। आज तक अफगानिस्तान में यह जुमला है कि "दुख्तरे हिंदुस्तान नीलामे दो दीनार" यानि हिंदुस्तान की बेटियां दो दीनार में नीलाम होती थीं।

इस्लामी आक्रमण और क्रूरता की प्रमुख घटनाएं : 11वीं शताब्दी की शुरुआत में महमूद गजनी के हमले अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात हैं। उसने प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर सहित अनेक मंदिरों का विध्वंस कर हजारों लोगों की हत्या की थी। बाद में 14वीं शताब्दी में एक अन्य मुस्लिम आक्रमणकारी तैमूर के आक्रमण में अत्यधिक हिंसा और विनाश हुआ। ऐतिहासिक विवरण हिन्दुओं के खिलाफ उसके अभियानों के हिस्से के रूप में सामूहिक हत्याओं और महिलाओं के अपहरण का वर्णन करते हैं।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा : अमीर खुसरो और जियाउद्दीन बरनी जैसे इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि सैन्य अभियानों के दौरान हिन्दू महिलाओं को बंदी बनाया जाता और गुलाम बनाकर इन्हें विदेशी क्षेत्रों में भेजा जाता था या हरम में शामिल किया जाता था। तारीख-ए-फिरोजशाही और बाबरनामा जैसे ग्रंथों में इन अत्याचारों का वर्णन है। महमूद गजनी और तैमूर के आक्रमणों में महिलाओं और बच्चों की बड़े पैमाने पर गुलामी की घटनाएं इतिहास में दर्ज हैं।

इस्लामी आक्रमणकारियों ने अकसर

युद्ध की रणनीति के रूप में यौन हिंसा का सहारा लिया। रिपोर्ट बताती हैं कि लूट के बाद खूबसूरत महिलाओं को खलीफाओं और रईसों के पास उपहार या मुस्लिम सिपहसालारों के लिए पुरस्कार के रूप में भेजा जाता था।

समाज में बदलाव और प्रथाएं: इन आक्रमणों के खतरों ने महिलाओं से संबंधित सामाजिक प्रथाओं में बड़े बदलाव किए।

जौहर प्रथा का उदय : राजस्थान जैसे क्षेत्रों में, जहां अलाउद्दीन खिलजी और अकबर जैसे मुस्लिम शासकों के खिलाफ कड़ा प्रतिरोध था, महिलाओं ने हार की स्थिति में अपनी अस्मिता और सतीत्व की रक्षार्थ जौहर प्रथा (अग्नि प्रवेश द्वारा प्राणोत्सर्ग) का पालन किया। रानी पद्मिनी और अन्य नारियों का प्राणोत्सर्ग इसका प्रमाण है। यह प्रथा राजपूतों में स्वाभिमान की रक्षा के रूप में प्रचलित हो गई।

पर्दा प्रथा : इस अवधि के दौरान पर्दा (एकांत) की अवधारणा अधिक व्यापक हो गई, जो इस्लामी रीति-रिवाजों से प्रभावित थी, जिसमें आक्रमणकारियों द्वारा उत्पन्न कथित खतरों से महिलाओं के सम्मान की रक्षा पर जोर दिया गया था।

बाल विवाह : आक्रमणों से पैदा हुई असुरक्षा की प्रतिक्रिया में, परिवारों ने अपहरण के खिलाफ सुरक्षात्मक उपाय के रूप में छोटी उम्र में बेटियों की शादी करना प्रारम्भ कर दिया।

मुगल शासन में महिलाओं की स्थिति : कुछ इस्लामपरस्त लेखकों ने प्रमाणित करने का प्रयास किया कि अकबर ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कुछ कदम उठाए, जैसे बाल विवाह और सती प्रथा पर रोक लगाना लेकिन ये तथाकथित सुधार वास्तव में महिलाओं को हरम में रखकर यौन गुलामी के उपकरण के रूप में काम कर रहे थे। मुगलों के विशाल हरम में विभिन्न समुदायों, जिनमें हिन्दू भी शामिल थे, की महिलाओं को रखा जाता था। यह दौर महिलाओं को यौन उपभोग की वस्तु मात्र बना देने का दौर था जो और भी नारकीय चरण था। ऐसे दौर में हरम की महिलाओं की सामाजिक, पारिवारिक स्वीकार्यता समाप्त हो जाती थी।

दुर्धर्ष संघर्षों के बाद भी हिन्दू नारियों का गौरवशाली योगदान : इन चुनौतियों के बावजूद, हिन्दू महिलाएं कला, साहित्य और धार्मिक आंदोलनों में सक्रिय रहीं। मीराबाई जैसी संत-कवि इस अशांत समय में भी प्रेरणा का स्रोत बनीं। कठिनाइयों के बावजूद, हिन्दू महिलाओं ने असाधारण साहस और प्रतिरोध का प्रदर्शन किया। रानी दुर्गावती और चांद बीबी जैसी वीरांगनाओं ने मुस्लिम आक्रमणकारियों का वीरता से सामना भी किया और इस संघर्षकाल में सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विधर्मियों द्वारा मंदिरों और शैक्षणिक संस्थानों के विध्वंस के बावजूद धर्म-संस्कृति को अगली पीढ़ियों तक पहुंचाया गया।

भारत की वीर-बलिदानी परम्परा का गौरवशाली अध्याय : 23–24 फरवरी की अर्द्धरात्रि, 1568 ई. को चित्तौड़ का तीसरा जौहर हुआ जिसका नेतृत्व रावत पत्ता चुण्डावत की पत्नी फूल कंवर जी ने किया था। अबुल फजल लिखता है 'हमारी फौज 2 दिन से भूखी-प्यासी होने के बावजूद सुरंगों को तैयार करने में लगी रही। इसी दिन रात को अचानक किले से धुंआ उठता नजर आया। सभी सिपहसालार अंदाजा लगाने लगे कि अंदर क्या हुआ होगा, तभी आमेर के राजा भगवान दास ने शहंशाह को बताया कि 'किले में जो आग जल रही है, वो जौहर अग्नि है और राजपूत योद्धा केसरिया के लिए तैयार हैं, इसलिए हमको भी तैयार हो जाना चाहिए।'

जौहर करने वाली पुनीत मातृशक्तियां अग्नि की साक्षी में अपने पति देवों के सन्मुख ही भस्मीभूत हो गईं परन्तु संसार में, सनातन धर्म की धाक, हिन्दू जाति की नाक, क्षत्रियों का क्षत्रियत्व, वीरभूमि चित्तौड़ की मरोड़ और पीहर व सुसराल दोनों पक्षों की साख को सुरक्षित रख गईं।

रावत पत्ता चुण्डावत की आंखों के सामने उनकी माता सज्जन कंवर, 9 पत्नियों, 5 पुत्रियों व 2 छोटे पुत्रों ने जौहर किया।

सैकड़ों वर्षो तक जिस समाज की वीरांगनाओं ने जवानी में वैधव्य झेला और लाल चूड़ा पहनकर जौहर व्रत का पालन किया, बच्चों को अपने पिता के प्रेम से वंचित होना पड़ा और केवल इसलिए कि उनके लिए अपनी गौरवशाली सनातन संस्कृति की रक्षा का दायित्वबोध और इसका कर्तव्यपालन सर्वोपरि था। ऐसी महान वीरांगनाओं के यश का बखान करते हुये कवियों ने भी कहा है –

साख अगन धव साख सज,
धरम सनातन धाक।
राख हुई पण राखगी,
निज हिन्दू कुल नाक॥
निज हिन्दू कुल नाक ठाकरां ठाकरी।
मह चित्तौड़ मरोड़, पैठ बिहुँ पाखरी॥
पाल्यो पीहर पन्थ बिरद मा-बापरो।
सासरियो साबाश उजाळ्यो आपरो॥

भावार्थ- अग्नि की साक्षी में अपने पति देवों के सन्मुख ही वे भस्मीभूत हो गईं परन्तु संसार में, सनातन धर्म की धाक, हिन्दू जाति की नाक, क्षत्रियों का क्षत्रियत्व, वीर भूमि चित्तौड़ की मरोड़ और पीहर व सुसराल दोनों पक्षों की साख को सुरक्षित रख गईं। इस प्रकार उन्होंने पीहर की मर्यादा और माता-पिता के विरद का पालन कर अपने प्रशंसनीय ससुराल को उज्ज्वल किया।

नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों के गौरवमयी इतिहास का ज्ञान अवश्य होना चाहिए जिससे वे प्रेरणा ले सकें कि संकट और विपदा काल में भी हिन्दू नर-नारियों ने अपने साहस, बलिदान और वीरता से अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासतों, धरोहरों को संरक्षित रखा। यह विषय हमें इतिहास के उन सबक की याद दिलाता है, जिन्हें समझ कर सावधान होने की आवश्यकता है कि अब कोई गौरी-गजनी दोबारा हमारे राष्ट्र भारत पर कुदृष्टि न डाल सके।

इस्लामिक आक्रांताओं के सामने ढाल बनीं दुर्गावती

मृदुल त्यागी
पत्रकार

पूरा मुगलकाल ऐसी गाथाओं का काल है, जिसमें हिन्दू प्रतिकार की एक से बढ़कर एक मिसाल है। वह युद्ध जो हिन्दुओं ने आठ सौ सालों तक लड़ा। नाम बदले, जगह बदली, लेकिन मातृभूमि को यवनों के हाथ में न देने की जिद में न जाने कितने ही प्राणों की आहुतियां इस युद्धकाल में दी गईं। ऐसी ही एक गाथा है भगवा ध्वज वाहिका रानी दुर्गावती की जो खून की आखिरी बूंद तक मुगलों से लड़ीं और मौत ऐसी कि मुगलों के हाथ में पड़ने के बजाय अपने ही हाथों से स्वयं को बलिदान कर दिया। गोंड साम्राज्य की रानी दुर्गावती बस नाम की दुर्गा न थीं। दुर्गाष्टमी को चंदेल वंश में जन्मी गढ़ा-कटंगा की रानी दुर्गावती ने 40 वर्ष के छोटे से जीवन में इतिहास में राजकीय प्रशासन और रण कौशल में स्वर्णिम पंक्तियां लिख डाली।

दुर्गावती का विवाह गढ़ा-कटंगा के गोंड राजा संग्राम सिंह के पुत्र दलपत शाह से हुआ। मुस्लिम आक्रांताओं के गुलामों का गुलाम वंश जब अस्त हुआ, तो उसी समय गढ़ा-कटंगा नाम का छोटा सा राज्य उदित हुआ। संग्राम शाह के शासनकाल में यह राज्य सुगठित रूप से सामने आया। इसमें वर्तमान में मध्य प्रदेश के जबलपुर, मंडला, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, भोपाल, सागर और दमोह जिले शामिल थे। वर्तमान छत्तीसगढ़ का कुछ क्षेत्र भी इसी राज्य का हिस्सा था।

मुस्लिम आक्रांताओं के गुलामों का गुलाम वंश जब अस्त हुआ, तो उसी समय गढ़ा-कटंगा नाम का छोटा सा राज्य उदित हुआ। संग्राम शाह के शासनकाल में यह राज्य सुगठित रूप से सामने आया। इसमें वर्तमान में मध्य प्रदेश के जबलपुर, मंडला, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, भोपाल, सागर और दमोह जिले व वर्तमान छत्तीसगढ़ का हिस्सा शामिल था।

दलपत शाह के शासनकाल में ही रानी दुर्गावती पति के साथ राजकीय कार्यों में भूमिका निभाने लगी थीं। 1548 में अचानक दलपतशाह की असमय मृत्यु हुई, तो उनके बाल्यावस्था के पुत्र वीर नारायण सिंह का राज्यभिषेक हुआ। रानी दुर्गावती ने पुत्र की ओर से शासन की बागडोर अपने हाथों में संभाली। दलपत शाह की अचानक मृत्यु और बालक वीर नारायण के राज्याभिषेक के कारण विद्रोही सर उठाने लगे। रानी ने बहुत कुशलता से विद्रोह का दमन किया और राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। उनके राज्य में कुल 23000 गांव थे, जिन्में 11000 सीधे रानी के अधीन थे। बाकी गांवों का प्रबंधन जागीरदार देखते थे। रानी दुर्गावती की देख-रेख में राज्य में व्यापार काफी फला-फूला। सोने और हाथी में भुगतान होने लगे। इस काम में रानी का साथ देते थे उनके दो मंत्री- आधार और मान। इस पूरे क्षेत्र में जल संरक्षण हमेशा से एक समस्या रहा। प्रजावत्सल रानी ने अपनी प्रजा के लिए रानीताल, चेरीताल और आधारताल जैसे अनेक सरोवरों-तालाबों का निर्माण कराया। सनातन धर्म के आचार्य बिट्ठलनाथ को पुष्टिमार्ग पंथ का केंद्र स्थापित करने की अनुमति देने के साथ रानी ने उनसे दीक्षा भी ली।

रानी की सेना में 20000 घुड़सवार, 1000 हाथी और पैदल सैनिक थे। पहली चुनौती उन्हें मालवा के मुस्लिम शासक बाज बहादुर खान से मिली। बाज बहादुर ने 1555

और 1560 के बीच दो बार हमला किया। लेकिन रानी ने कुशल सैन्य रणनीति से बाज बहादुर को खदेड़ दिया। उधर, दिल्ली से अकबर का इस्लामिक विस्तारवाद शुरू हो चुका था। एक के बाद एक राज्यों पर अकबर के सिपहसालार हमले कर रहे थे। 1562 में मुगल फौज ने बाज बहादुर को पराजित कर मालवा पर अधिकार कर लिया। अकबर अब गोंडवाना की सीमा पर आ गया था। मुगल सेनापतियों ने रीवा और पन्ना पर भी कब्जा कर लिया था। गढ़ा-कटंगा तीन ओर से घिर चुका था। कारा-मानिकपुर में मुगल सूबेदार आसफ खान आ बैठा था।

यहां से रानी की पीठ में छुरा घोंपने की रणनीति शुरू हुई। आसफ खान ने रानी की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। उसने व्यापारिक संबंध बनाने के बहाने अपने जासूस गढा-कटंगा में फैला दिए। जासूसों ने रानी की सेना, सामरिक ठिकानों की जानकारी आसफ खान तक पहुंचा दी। मुगल फौज ने जंग के बहाने तलाशने शुरू किए। पहले सीमावर्ती गांवों पर हमले किए गए। जब संबंध खराब होने लगे तो 1564 में आसफ खान ने 10,000 घुड़सवारों, पैदल सैनिकों और भारी तोपखाने के साथ गढ़ा-कटंगा पर चढ़ाई कर दी। रानी दोस्ती के झांसे में थी। रानी के सैनिक विद्रोहियों को कुचलने के लिए राजधानी से दूर थे। कुछ छुट्टी पर थे। मंत्रियों ने रानी दुर्गावती को सलाह दी कि वे लड़ाई को फिलहाल टाल दें। लेकिन आसफ खान दमोह तक चढ़ आया था। रानी दुर्गावती ने घुटने टेकने के बजाय शत्रु सेना से युद्ध का फैसला किया। रानी पांच सौ सैनिकों के साथ निकलीं। रास्ते में ग्रामीणों को इकट्ठा करती हुई वे नरही गांव पहुंचीं। यह स्थान ऊंची पहाड़ियों वाला था। एक तरफ नर्मदा नदी थी और दूसरी ओर गौर नदी। इस संकरे से इलाके में रानी ने मोर्चाबंदी कर ली। रानी दुर्गावती ने अपने सैनिकों को बता दिया कि ये जीवन और मृत्यु का युद्ध है। जो चाहे मैदान छोड़कर जा सकता है। लेकिन रानी दुर्गावती के नेतृत्व में विश्वास और उनके प्रति श्रद्धा ऐसी थी कि कोई भी

राजा दलपत शाह के शासनकाल में ही रानी दुर्गावती पति के साथ राजकीय कार्यों में भूमिका निभाने लगी थीं। 1548 में अचानक दलपत शाह की असमय मृत्यु हो गयी, तो उनके पुत्र वीर नारायण सिंह का राज्याभिषेक हुआ। रानी दुर्गावती ने पुत्र की ओर से शासन की बागडोर अपने हाथों में संभाली।

योद्धा मैदान छोड़कर न गया।

दर्रे की रक्षा के लिए हाथी तैनात कर दिए गए। जब दुश्मन दर्रे के अंदर आ गया, तो रानी की सेना उन पर टूट पड़ी। अपनी छोटी सी सेना से ही उन्होंने वो पराक्रम दिखाया कि दुश्मन के पांव उखड़ गए। 300 मुगल सैनिक मारे गए और बाकी को खदेड़ दिया गया। उनका बेटा वीर नारायण भी जंग में शामिल था। दुश्मन के भाग खड़े होने के बाद रानी ने अपने सेनापतियों की बैठक बुलाई। उन्होंने रात में ही मुगलों पर हमले का प्रस्ताव रखा, लेकिन सेनापति राजी न हुए।

इसका नतीजा ये हुआ कि आसफ खान अपनी तोपें दर्रे के अंदर लाने में कामयाब हो गया। मुगल दोगुनी ताकत के साथ लौटे। रानी ने आमने-सामने की जंग का फैसला किया। वह अपने हाथी सरमन पर सवार होकर मैदान में उतरी। युद्ध में उन्हें दो तीर लगे। एक गर्दन पर और दूसरा कनपटी पर। तीर निकाले गए, लेकिन वह बेहोश हो गईं। उधर मुगलों की बड़ी फौज रानी के मुट्ठी भर सैनिकों पर भारी पड़ने लगी। रानी जब होश में आईं, तो वह चारों ओर से घिर चुकी थीं। रानी ने कहा कि मैं जीते-जी दुश्मन के हाथ नहीं पड़ूंगी और उन्होंने अपना ही खंजर निकालकर सीने में घोंप लिया। इस प्रकार 24 जून 1564 को वो वीरगति को प्राप्त हुईं। जबलपुर से 12 मील दूर एक संकरे से पहाड़ी दर्रे में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

उनकी मौत के बाद आसफ खान ने राजधानी चौरागढ़ को घेर लिया। वीर नारायण किले के अंदर थे। वह अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ किले से बाहर युद्ध के लिए निकले और वीरगति को प्राप्त हुए। किले के अन्दर उपस्थित नारियों ने जौहर कर लिया। आसफ खान ने चौरागढ़ में लूट-पाट मचाई। राज्य का खजाना भी लूट लिया। उसने सूबेदारी की जगह अपनी सत्ता का दावा किया, लेकिन आखिरकार अकबर के सामने उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा।

मुगल इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा है कि रानी दुर्गावती सुंदरता और साहस का अद्भुत संगम थीं। वह तीर, तलवार और बंदूक चलाना जानती थीं। वे जब शिकार पर जाती थीं तो अगर किसी बाघ पर उनकी नजर पड़ गई, तो वह जब तक उसे मार न लेती थीं, पानी नहीं पीती थीं। ब्रिटिश कर्नल स्लीमैन ने भी रानी दुर्गावती के साहस की गाथा को लिखा। उन्होंने लिखा कि गढ़ा-कटंगा के सभी राजाओं में रानी दुर्गावती श्रेष्ठतम थीं। ■

स्व, समरसता और नारी सशक्तीकरण की प्रेरणापुंज

डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया
शिक्षक, भौतिकी विज्ञान विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

इतिहासकारों के अनुसार रानी दुर्गावती का साम्राज्य पूर्व से पश्चिम 400 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण 193 किलोमीटर फैला हुआ था। रानी दुर्गावती द्वारा पूरे राज्य में शांति, व्यापार, समरसता और जन सुविधाओं का प्रबंधन अद्भुत एवं अद्वितीय था। उन्होंने अनेक जलाशयों का निर्माण कराया तथा शिक्षा, ज्ञान के अनेक केंद्र खुलवाए।

पुण्यभूमि भारत पर विदेशी आक्रान्ताओं के हजारों वर्षों के आक्रमणों और षड्यंत्रों के बाद आज भी केसरिया पताका फहराने का श्रेय माँ भारती की जिन संतानों को दिया जा सकता है उनमें शौर्य, देश प्रेम एवं शासन निपुणता की बेजोड़ प्रतिमूर्ति रानी दुर्गावती प्रमुख हैं। रानी दुर्गावती का जन्म महोबा के चंदेल राजा कीर्तिवर्मन द्वितीय के यहाँ वर्ष 1524 में दुर्गाअष्टमी के दिन कालिंजर किले में हुआ था। दुर्गावती का बचपन से ही घुड़सवारी, तलवारबाजी एवं तीरंदाजी में प्रवीण होना, पिता के साथ जंगलों में खतरनाक जानवरों का शिकार करना, 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' जैसी लोकोक्ति को शब्दशः चरितार्थ करता है। वर्ष 1542 में 18 वर्ष की आयु में दुर्गावती का विवाह गढ़-कटंगा के गोंड राजा संग्राम शाह के दत्तक पुत्र दलपत शाह से हुआ। यह विवाह सामाजिक समरसता का अद्वितीय उदाहरण है और उन आलोचकों को करारा जवाब है जो भारतीय समाज को जाति/ वर्णों में बांटकर पहले कमजोर और फिर नष्ट करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच सामरिक दृष्टि से निर्मित किए गए कुल 52 किलों वाले गढ़-कटंगा साम्राज्य का नाम 'गढ़ा' नामक नगर और 'कटंगा' नामक गांव से लिया गया। विवाह के दो वर्ष बाद दुर्गावती के पुत्र वीर नारायण का जन्म हुआ। दुर्भाग्य से विवाह के कुछ वर्ष बाद वर्ष 1548 में उनके पति का निधन हो गया और गढ़-कटंगा पर संकट के काले बादल छा गए। शायद इन्हीं स्थितियों के लिए राष्ट्रकवि दिनकर लिखते हैं, **"उस पुण्य भूमि पर आज तपी, रे आन पड़ा संकट कराल। व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे, डंस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।।"** ऐसे समय में गढ़-मंडला को बचाने की चुनौती दुर्गावती ने स्वीकार की और वीर नारायण के प्रतिनिधि के रूप में राज्य की बागडोर स्वयं संभाल ली। अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल के अनुसार दुर्गावती के शासन के अंतर्गत 70,000 गांव थे जिसमें से 23,000 गांव में भरपूर खेती होती थी। इतिहासकारों के अनुसार रानी दुर्गावती का साम्राज्य पूर्व से पश्चिम 400 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण 193 किलोमीटर तक फैला हुआ था। रानी दुर्गावती ने अपने पूरे राज्य में शांति, व्यापार, समरसता और जन सुविधाएं बढ़ाने पर जोर दिया। उनके राज्य में जल प्रबंधन अद्भुत एवं अद्वितीय था। उन्होंने जनसमुदाय के लिए अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, स्वयं के नाम पर रानीताल तथा अपने दीवान के नाम पर आधारताल जैसे जलाशयों का निर्माण कराया तथा शिक्षा, ज्ञान के केंद्र भी खुलवाए। हिन्दू धर्म के पुष्टिमार्ग संप्रदाय के प्रवर्तक वल्लभाचार्य के पुत्र आचार्य विट्ठलनाथ को गढ़ा में पुष्टिमार्ग पंथ का केन्द्र स्थापित करने

की सुविधाएं दीं। सामरिक कारणों से उन्होंने अपनी राजधानी सिंगोरगढ़ किले से चौरागढ़ किले में स्थानांतरित कर दी। वर्ष 1548 में शासन की बागडोर संभालने से लेकर वर्ष 1564 में बलिदान होने तक रानी दुर्गावती का कुल सोलह वर्षों में लगभग पचास युद्धों का नेतृत्व करना और सब में विजयी होना 'स्व' के लिए उनकी प्रतिबद्धता दर्शाता है। दुर्गावती के सुशासन का ही परिणाम था कि तत्कालीन भारत में वह अकेला ऐसा राज्य था जहां की जनता अपना लगान स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों में चुकाती थी। इसके साथ ही उन्होंने बालिकाओं को शिक्षित व सशक्त करने पर बल दिया। लड़कियों को युद्ध कौशल सिखाकर पूरी तरह तैयार करके सेना में शामिल किया गया था। गोंडवाना साम्राज्य में 500 वर्ष पहले महिला बटालियन होना, दुर्गावती की दूरदर्शिता और प्रगतिशील सोच को दर्शाता है।

वर्ष 1556 में मालवा के सुल्तान बाज बहादुर ने रानी को महिला व अबला समझ गोंडवाना पर हमला बोला। परंतु रानी दुर्गावती ने बाज बहादुर को बुरी तरह परास्त कर दिया। वर्ष 1562 में अकबर ने मालवा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया और रीवा पर अब्दुल मजीद आसफ खान का कब्जा हो गया। रीवा और मालवा दोनों गोंडवाना की सीमाओं को छूते थे और इस तरह अकबर के निशाने पर गोंडवाना भी आ गया। उसने इसे अपने राज्य में मिलाने की कोशिश आरंभ कर दी। आसफ खान ने गोंडवाना पर आक्रमण किया, लेकिन दुर्गावती के आगे उसकी एक न चली। वर्ष 1564 में आसफ खान ने पुनः आक्रमण कर दिया। पहले दिन की जीत के बाद दुर्गावती ने जब युद्ध परिषद् में रात में ही हमले का प्रस्ताव रखा तो परिषद् ने सनातन मूल्यों का हवाला देते हुए उसे अस्वीकार कर दिया। अगले दिन दुश्मन सेना ने बड़ी तोपों और भारी सेना के साथ दर्रे में प्रवेश किया। बहादुर रानी अपने हाथी, सरमन पर सवार होकर अपने पुत्र के साथ युद्ध के मैदान में डट गयीं, दोनों मुगल सैनिकों को कई बार पीछे धकेलने में सफल रहे। लड़ाई जब तक चलती रही, तब तक कि वीर नारायण बुरी तरह से घायल नहीं हो गए। इसके बाद भी रानी तब तक लड़ती रहीं जब तक वह दाहिनी कनपटी और गर्दन में लगे तीरों से घायल नहीं हो गईं। जब वह होश में आईं तो उन्हें हार और पकड़े जाने पर होने वाले दुराचरण का अहसास हो चुका था। अतः उन्होंने अपने सैन्य अधिकारी को उन्हें मार डालने के लिए कहा, परंतु उसके मना करने पर उन्होंने अपने ही खंजर से 24 जून 1564 को देश और संस्कृति की रक्षा के लिए स्वयं बलिदान दे दिया। इसके बाद आसफ खां चौरागढ़ किले को घेर लेता है, जिसे वीर नारायण ने अपनी बहादुरी से अंत तक बचाया हुआ था। हार सुनिश्चित जान अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु लगभग 5000 नारियों ने जौहर किया और वीर नारायण लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। दुर्गावती की कहानी को कई साल बाद ब्रिटिश कर्नल स्लीमैन ने भी लिखा, जिसमें उन्होंने रानी को गढ़ा-कटंगा पर शासन करने वाले सभी संप्रभुओं में सर्वाधिक श्रद्धेय माना। मंडला जिले का गजेटियर लिखता है कि "रानी दुर्गावती दुनिया की महान महिलाओं में गिनी जाने योग्य हैं"। 'Rani Durgawati: The Forgotten Life of a Warrior Queen' की लेखिका नंदिनी सेनगुप्ता के शब्दों में दुर्गावती विचारों से अत्याधुनिक एवं अपने समय से बहुत आगे थीं।

यह विडंबना ही है कि रानी दुर्गावती को इतिहास में अभी तक वह सम्मान नहीं मिल सका जिसके वो योग्य थीं। फिर भी पिछले कुछ समय में राज्य और केंद्र की सरकारों ने कुछ सराहनीय प्रयास किए हैं जिससे रानी दुर्गावती के योगदान को भारतीय जनमानस के सम्मुख लाया जा सके और नई पीढ़ी उनसे प्रेरित हो सके। इसी क्रम में 1976 में जबलपुर स्थित संग्रहालय का नाम रानी दुर्गावती संग्रहालय रखना, वर्ष 1983 में जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय करना, जबलपुर में बरेला के निकट नरिया नाला में रानी की समाधि पर प्रतिवर्ष 24 जून को 'बलिदान दिवस' मनाया जाना, भारत सरकार द्वारा 24 जून 1988 को दुर्गावती के बलिदान दिवस पर तथा उनके 500 वें जन्मदिन 5 अक्टूबर 2023 को डाक टिकट जारी किया जाना, वर्ष 2018 में भारतीय तटरक्षक बल द्वारा अपने तीसरे तटीय गश्ती पोत (आईपीवी) का नाम 'आईसीजीएस रानी दुर्गावती' रखा जाना, जबलपुर और जम्मू-तवी के बीच चलने वाली ट्रेन का नाम दुर्गावती एक्सप्रेस रखा जाना, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा रानी दुर्गावती के 500 वें जन्मदिवस पर सिंगरामपुर में अपनी कैबिनेट बैठक कर जबलपुर में 100 करोड़ की लागत से रानी दुर्गावती स्मारक तथा उद्यान बनाने को स्वीकृति देना आदि ऐसे कुछ प्रयास हैं जो दुर्गावती के संघर्ष, देशप्रेम और दूरदर्शिता को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में सहायक होंगे। निःसंदेह दुर्गावती ने अपने नाम को चरितार्थ किया और दुर्गा की मानव अवतार सिद्ध हुईं। उन्होंने सामाजिक समरसता और स्व का मंत्र हम सबको दिया। उन्होंने संप्रभुता का सौदा न करके उसे मरते दम तक अक्षुण्ण रखा। उन्होंने इस भ्रम को भी तोड़ा कि महिला शासक कमजोर होती है और उन्हें हराना आसान होता है। वो महिला सशक्तीकरण की एक अद्भुत मिसाल हैं। उन्होंने अपने राज्य को मुगलों के हाथों में जाने से बचाने के लिए अपने जीवन की बाजी लगा दी। वीरांगना दुर्गावती के 'स्व' के संघर्ष ने रानी लम्मीबाई एवं रानी अहिल्याबाई होल्कर जैसी अनगिनत महिला शासकों को प्रेरित किया।

(समस्त संदर्भों का हार्दिक आभार)

तत्कालीन भारत में वह अकेला ऐसा राज्य था जहां की जनता अपना लगान स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों में चुकाती थी। इसके साथ ही उन्होंने बालिकाओं को शिक्षित व सशक्त करने पर बल दिया। लड़कियों को युद्ध कौशल सिखाकर पूरी तरह तैयार करके सेना में शामिल किया गया था। उस समय गोंडवाना साम्राज्य में महिला सेना भी थी।

रानी दुर्गावती : साहस और त्याग की प्रतिमूर्ति

पूनम कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
आई.एम.एस.गाजियाबाद

भारत का इतिहास अनेक वीरांगनाओं और शूरवीरों के बलिदानों से भरा पड़ा है। इनमें से एक नाम जो हमेशा प्रेरणा और साहस का प्रतीक रहेगा, वह है रानी दुर्गावती। गोंडवाना की इस महान योद्धा ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अद्वितीय साहस का प्रदर्शन किया और आत्म-सम्मान की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं। उनका जीवन भारतीय नारी शक्ति का वह स्वरूप प्रस्तुत करता है, जो शासन, प्रशासन और युद्धकला में समान रूप से दक्ष थीं। रानी दुर्गावती की कहानी बलिदान, निष्ठा और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम की अमर गाथा है। उनके साहस और कुशल नेतृत्व ने मुगल सेना को हिला कर रख दिया।

धरा की शान, वीरता की पहचान थीं,
रणभूमि में अडिग, दुर्गावती महान थीं।
सिंहनी सी दहाड़, दुश्मनों को हराया,
नारी शक्ति का जग में ध्वज लहराया।
बलिदान की मूरत, भारत की आन थीं।
रणभूमि में अडिग, दुर्गावती महान थीं।

रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर 1524 को कालिंजर किले में चंदेल वंश के राजा कीर्ति वर्मन के यहां हुआ जिन्हें शालिवाहन या सालवान भी कहा गया है। मान्यता है कि उनका नाम 'दुर्ग' यानी 'किला' से प्रेरित होकर रखा गया, जो उनके दृढ़ और अडिग व्यक्तित्व को दर्शाता है। कुछ इतिहासकारों का यह भी कहना है की उनका जन्म दुर्गाष्टमी को हुआ था इस कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। चंदेल वंश के गौरवशाली इतिहास ने उनके व्यक्तित्व को साहसी और स्वाभिमानी बनाया। बचपन से ही उन्हें घुड़सवारी, तीरंदाजी और शस्त्र और शास्त्र का प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही उन्होंने राजनीति और प्रशासन की शिक्षा भी प्राप्त की। उनके पिता ने उन्हें एक स्वतंत्र और निडर योद्धा के रूप में तैयार किया। उनके राज्य में नारी को जितना सम्मान और बल मिला उसने न केवल स्त्री शक्ति को सशक्त किया बल्कि उनको जीवन को जीने के नए आयाम भी मिले।

> **जब रानी को लगा कि परिस्थितियां प्रतिकूल हो रही हैं और उनकी हार सुनिश्चित है, तब उन्होंने आत्म समर्पण करने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपने साथी को अपनी कटार देकर कहा कि आप मेरे प्राण ले लो ताकि शत्रु मुझे छू भी न पाए। सिपहसालार के मना करने के बाद उन्होंने अपनी ही कटार अपने सीने में उतार कर 24 जून 1564 को अपना बलिदान दे दिया।**

दुर्गावती का साहस और वीरता उनके बचपन के अनुभवों से ही झलकती थी। छोटी उम्र में ही उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और शारीरिक क्षमता से दूसरों को प्रभावित किया। उनकी निपुणता और गुणों ने उन्हें एक असाधारण नारी बना दिया, जिसने आगे चलकर गोंडवाना की रक्षा में अद्वितीय भूमिका निभाई।

1542 में रानी दुर्गावती का विवाह गोंडवाना के राजा दलपत शाह से हुआ, जो राजा संग्राम शाह के पुत्र थे। यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का ही नहीं, बल्कि दो महान

संस्कृतियों का मिलन था; चंदेल और गोंड। यह गठबंधन मध्य भारत में एकता और सहयोग का प्रतीक था।

रानी दुर्गावती केवल एक वीरांगना ही नहीं थीं, बल्कि कुशल नेतृत्व की क्षमता भी उनमे कूट-कूट कर भरी थी। उनका शासनकाल गोंडवाना की समृद्धि और स्थिरता का स्वर्णिम युग था। उन्होंने प्रजा के कल्याण के लिए कई योजनाएं लागू की।

कृषि का विकास : रानी दुर्गावती ने किसानों को बेहतर सुविधाएं प्रदान की और सिंचाई प्रणाली को सुधारने के लिए कदम उठाए। उनके प्रयासों से गोंडवाना में कृषि क्षेत्र सशक्त हुआ।

व्यापार और उद्योग का प्रोत्साहन : उन्होंने व्यापार को प्रोत्साहन दिया और राज्य के आर्थिक ढांचे को सुदृढ़ किया।

प्रजा का कल्याण : रानी दुर्गावती अपनी प्रजा के प्रति अत्यंत संवेदनशील थीं। उन्होंने जल प्रबंधन, शिक्षा, स्वास्थ्य और महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए विशेष प्रयास किए। उनका प्रशासनिक कौशल यह दर्शाता है कि वे न केवल युद्धभूमि में, बल्कि शासन में भी अपनी क्षमता का लोहा मनवाने में सक्षम थीं।

1564 में मुगल आक्रान्ता अकबर के सेनापति आसफ खान ने गोंडवाना पर आक्रमण किया। मुगलों का उद्देश्य गोंडवाना को अपने साम्राज्य में शामिल करना था। रानी दुर्गावती ने इस चुनौती को स्वीकार किया और आत्मसमर्पण करने के बजाय युद्ध का मार्ग चुना।

नरई नाला का युद्ध इस संघर्ष का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है। रानी ने अपनी छोटी सेना के साथ मुगल सेना का डटकर सामना किया। युद्ध भूमि में वे अपने हाथी 'सरमन' पर सवार होकर आगे बढ़ीं। उनकी वीरता और नेतृत्व कौशल ने मुगल सेना को कई बार पीछे हटने पर मजबूर किया।

हालांकि, मुगल सेना संख्या और संसाधनों में बहुत मजबूत थी। जब रानी को लगा कि परिस्थितियां प्रतिकूल हो रही हैं और उनकी हार सुनिश्चित है, तब उन्होंने आत्म समर्पण करने से इनकार कर दिया। उन्होने अपने साथी सिपहसालार को अपनी कटार देकर कहा कि आप मेरे प्राण ले लो ताकि शत्रु मुझे छु भी न पाए। सिपहसालार के मना करने के बाद उन्होने अपनी ही कटार अपने सीने में उतार कर 24 जून 1564 को अपना बलिदान दे दिया। रानी दुर्गावती ने अपने आत्म सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अंतिम क्षण तक संघर्ष किया।

दुर्गावती का साहस और वीरता उनके बचपन के अनुभवों से ही झलकती थी। छोटी उम्र में ही उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और शारीरिक क्षमता से दूसरों को प्रभावित किया। उनकी निपुणता और गुणों ने उन्हें एक असाधारण नारी बना दिया, जिसने आगे चलकर गोंडवाना की रक्षा में अद्वितीय भूमिका निभाई।

रानी दुर्गावती का बलिदान भारतीय इतिहास में साहस और आत्म सम्मान रक्षा की अनूठी मिसाल है। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। उनके बलिदान ने यह साबित किया कि भारत की बेटियां भी देश की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं।

रानी दुर्गावती का नाम भारतीय इतिहास के उन महानायिकाओं में शामिल है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनकी स्मृति को सम्मानित करने के लिए मध्य प्रदेश के जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम 'रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय' रखा गया। 1988 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। उनकी गाथाएं केवल गोंडवाना तक सीमित नहीं हैं, वे समूचे भारत के लिए गर्व का विषय हैं। उनकी वीरता और बलिदान आज भी हमें प्रेरणा देते हैं।

रानी दुर्गावती केवल एक योद्धा नहीं थीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति का जीवंत उदाहरण थीं। उन्होंने यह दिखाया कि महिलाएं न केवल परिवार की जिम्मेदारियों को संभाल सकती हैं, बल्कि राज्य और युद्ध का नेतृत्व भी कर सकती हैं। उनका जीवन आज की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका जीवन भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में सदा के लिए अंकित रहेगा।

रानी दुर्गावती की साहस गाथा का वर्णन करते हुए कुछ पंक्तियां जो उनके व्यक्तित्व पर सही बैठती हैं।

वीरांगना थी रानी दुर्गावती, साहस की मिसाल।
शत्रु के आगे झुकी नहीं, रखी मर्यादा की ढाल।
त्याग और बलिदान से लिखा इतिहास नया,
नारी शक्ति की प्रतीक बनी उनकी रोद्र पुकार।
गूंजती है उनके पराक्रम की आज भी जय-जयकार।

दुर्गावती की समाधि वर्तमान में मंडला और जबलपुर के बीच, बरेला जिला में स्थित है। आज भी 24 जून को उनके बलिदान को "बलिदान दिवस" के रूप में याद किया जाता है।

भारतीय वीरांगनाओं का शौर्यपूर्ण बलिदान

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली (हापुड़)

पवित्र पुण्य भूमि भारत ने अनेक वीरों और वीरांगनाओं को जन्म दिया है जिनके त्याग, पराक्रम, शौर्य व बलिदान की गाथाएं भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है –

अंकित है इतिहास पत्थरों पर जिनके अभियानों का
कदम-कदम पर चिह्न मिलता यहां जिनके बलिदानों का
गुंजित जिनके शंख नाद से धरा अभी तक डोल रही
कंपित जिनके विजय घोष से हवा अभी तक बोल रही

वास्तव में सत्य ही है कि भारत भूमि ऐसे ही वीरों-वीरांगनाओं की जीवंत गाथाओं से आभूषित है जिन्होंने अपने शौर्य एवं बलिदानों से न केवल विदेशी आक्रांताओं के छक्के छुड़ाए बल्कि अपने पराक्रम से भारत का नाम समूचे विश्व में अमर कर दिया। अपने सतीत्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वयं को होम व समर्पित करने का इतिहास केवल भारत में ही मिलता है। सतीत्व की प्रतिमूर्तियां ऐसी अनेक वीरांगनाएं भारत में हुई हैं जिन्होंने अपने सतीत्व के बल पर न केवल मनुष्य को बल्कि भगवान को भी घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। अनुसूइया, सावित्री, लोपामुद्रा, अरुंधती, शाण्डिली, शतरूपा, लक्ष्मी, स्वधा, सती, संज्ञा, सुमति, श्रद्धा, मेना, स्वाहा, अहिल्या, द्रौपदी, कुंती, मंदोदरी और सुलक्षणा जैसी अनेक नारियों का नाम श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

भारत भूमि ऐसे ही वीर-वीरांगनाओं की जीवंत गाथाओं से आभूषित है जिन्होंने अपने शौर्य एवं बलिदानों से न केवल विदेशी आक्रांताओं के छक्के छुड़ाए बल्कि अपने शौर्य से भारत का नाम समूचे विश्व में अमर कर दिया। अपने सतीत्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वयं को होम व समर्पित करने का इतिहास केवल भारत में ही मिलता है।

प्रस्तुत लेख भारत की ऐसी तीन वीरांगनाओं को समर्पित है जिन्होंने विदेशी आक्रांताओं के समक्ष समर्पण से ज्यादा स्वाभिमान हेतु प्राथमिकता दी और अन्ततः अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

ऐसा ही एक नाम चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का है जिन्होंने चित्तौड़ पर मुस्लिम आक्रान्ता अलाऊद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय 26 अगस्त, 1303 को 16,000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया था। आज भी भारत के लोग रानी पद्मिनी को सती देवी कहकर पूजते हैं। जौहर की गाथाओं से भरे पृष्ठ भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। ऐसे अवसर एक नहीं, कई बार आये हैं, जब हिन्दू वीरांगनाओं ने अपनी पवित्रता की रक्षा के लिए 'जय हर-जय हर' कहते हुए हजारों की संख्या में सामूहिक अग्नि प्रवेश किया था। युद्ध के बाद रानी पद्मिनी और किले में उपस्थित सभी नारियों ने सम्पूर्ण शृंगार कर 'जय हर-जय हर' का उद्घोष करते हुए अग्नि प्रवेश किया। युद्ध में जीतकर अलाउद्दीन पद्मिनी को पाने की आशा से किले में घुसा, तो वहां जलती चिताएं उसे मुंह चिढ़ा रही थीं।

भारतीय इतिहास में ऐसी ही पराक्रमी रानी दुर्गावती का नाम भी स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है। रानी दुर्गावती, भारतीय इतिहास की एक ऐसी वीरांगना थीं जिनके साहस, पराक्रम और बलिदान की कहानियां आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं। रानी दुर्गावती 16वीं शताब्दी की एक ऐसी महिला योद्धा थीं जो अपने राज्य की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हो गई थीं। 5 अक्टूबर सन् 1524 को उत्तर प्रदेश के बांदा में राजा 'कीर्तिसिंह चंदेल' के घर दुर्गा अष्टमी के दिन जन्मी रानी दुर्गावती सुन्दर, सुशील, योग्य एवं साहसी नारी थी। 1542 ई. में उनका विवाह

मध्य क्षेत्र के गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र 'दलपत शाह' के साथ हुआ। लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही गोंडवाना राज्य के राजा दलपत शाह की मृत्यु हो गई। इस कठिन घड़ी में रानी दुर्गावती ने हिम्मत नहीं हारी और अपने 5 वर्षीय पुत्र को गोंडवाना राज्य का राजा घोषित कर राजकाज अपने हाथों में ले लिया। इस तरह उन्होंने लगभग 15–16 साल तक गोंडवाना में शासन किया और राज्य की रक्षा के लिए कई लड़ाईयां भी लड़ी। सन् 1564 में, मुगल सेनापति आसफ खान ने जब गढ़ा राज्य पर आक्रमण किया तो रानी दुर्गावती ने हार मानने की जगह युद्ध का चुनाव किया। रानी दुर्गावती पुरुष योद्धा के वेश में युद्ध में जाती थीं। अंत समय में जब उन्होंने अपनी मृत्यु को पास देखा तो अपने सतीत्व की रक्षार्थ स्वयं अपनी कटार से अपने प्राण ले लिए। उन्होंने अपनी वीरता और बलिदान से इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज करवाया।

माँ भारती की तीसरी वीरांगना झांसी की रानी थीं। जिन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज झांसी की रानी शौर्य, पराक्रम, वीरता और नेतृत्व का प्रतीक हैं। उनका जन्म 19 नवंबर 1835 को बनारस में हुआ। उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ था। देश में अंग्रेजों का राज्य था, वह धीरे-धीरे भारत की रियासतों को छल-बल से हड़प रहे थे। गंगाधर राव ने अपना राज्य सुरक्षित रखने के लिए अंग्रेजों से संधि कर ली। इसी दौरान रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। किन्तु तीन माह बाद ही राजकुमार का देहान्त हो गया। राज्य का उत्तराधिकारी न होने पर अंग्रेज झांसी हड़प लेंगे, इस चिंता में सलाह करके गंगाधर राव और लक्ष्मीबाई ने एक बालक को गोद ले लिया, जिसका नाम दामोदर राव रखा गया। इसी दौरान अचानक गंगाधर राव का भी देहान्त हो गया। अंग्रेजों ने दामोदर राव को झांसी का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया और झांसी को अपने राज्य में मिला लिया। रानी लक्ष्मीबाई, भला इसे कैसे स्वीकार करती? उन्होंने घोषणा कर दी कि, "मैं अपनी झांसी, नहीं दूंगी" और अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। 21 मार्च 1858 को अंग्रेज अफसर ह्यू रोज ने एक विशाल सेना लेकर झांसी पर आक्रमण कर दिया। दोनों ओर से घन घोर युद्ध होने लगा। रानी की तोपें अंग्रेजों पर कहर बन कर टूटी। घनगर्जन तोप ने ह्यू रोज की फौज के छक्के छुड़ा दिए लेकिन एक विश्वासघाती के कारण अंग्रेजी सेना किले में घुस आई। तब आपातकाल में सरदारों की राय मानकर रानी लक्ष्मीबाई अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बांध कर, घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ी और कालपी आ गईं और वहां से तात्या टोपे और नाना साहब के छोटे भाई राव साहब की सेना के साथ ग्वालियर पहुंचकर ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। महारानी के ग्वालियर पहुंचते ही ग्वालियर के महाराजा ने अंग्रेजों को सूचना दे दी। तब अंग्रेजी फौज भी ग्वालियर आ पहुंची। दोनों ओर से घमासान लड़ाई छिड़ गई। इस युद्ध में रानी का घोड़ा भी वीरगति को प्राप्त हो गया। उनकी वीरांगना योद्धा सखियां भी वीरगति को प्राप्त हो गईं। रानी को नया घोड़ा लेना पड़ा। नया घोड़ा, अनाड़ी था और अड़ जाता था। ऐसे में रानी ने लड़ाई से निकलने का निश्चय किया। उन्होंने दांतों से घोड़े की लगाम पकड़ी और दोनों हाथों से तलवार चलाते हुए बिजली की गति से आगे बढ़ीं। अंग्रेज फौज ने उनका पीछा किया। रानी लक्ष्मीबाई लगभग निकल ही आई थीं कि रास्ते में एक नाला आ गया। घोड़ा नया था। वह नाला पार करना नहीं जानता था। वह वहीं अड़ गया। तब तक पीछे से शत्रु सैनिक आ गए। एक अंग्रेज ने बंदूक से रानी को गोली मार दी। रानी ने फौरन उस अंग्रेज की गर्दन अपनी तलवार से उड़ा दी। घायल रानी का विकराल रूप देख अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई। तब तक रानी के विश्वासपात्र सिपाही आ गए। रानी के शरीर में अनेक घाव लगे थे। खून बह रहा था। वे रानी को पास ही संन्यासी क्रांतिकारी बाबा गंगादास की कुटिया ले गए। अपना अंत समय देख रानी ने अपने साथियों से कहा कि उनके प्राणांत के बाद अंग्रेज उनके शव को भी हाथ न लगा पाएं। इतना कह रानी ने ईश्वर को नमन कर अपनी अंतिम सांस ली। सिपाहियों की सहायता से बाबा गंगादास की कुटिया में ही रानी लक्ष्मीबाई का अंतिम संस्कार कर दिया गया। जब अंग्रेजी सेना वहां पहुंची तब उन्हें राख के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। बाद में उसी स्थान पर रानी की समाधि बना दी गई। अंग्रेजों से लड़ते हुए 18 जून 1858 के दिन रानी लक्ष्मीबाई मातृभूमि के लिए बलिदान हो गयी थीं। रानी लक्ष्मीबाई का बलिदान अनुकरणीय है। उनका नाम विश्व की महान वीरांगनाओं में लिखा गया है। उन्होंने वह कर दिखाया जो बड़े-बड़े राजे महाराजे नहीं कर पाए।

अपना अंत समय देख रानी ने अपने साथियों से कहा कि उनके प्राणांत के बाद अंग्रेज उनके शव को भी हाथ न लगा पाएं। इतना कह रानी ने ईश्वर को नमन कर अपनी अंतिम सांस ली। सिपाहियों की सहायता से बाबा गंगादास की कुटिया में ही रानी लक्ष्मी बाई का अंतिम संस्कार कर दिया गया।

माँ भारती की पावन भूमि में प्रत्येक प्रान्त और नगर के इतिहास का गूढ़ अध्ययन करने पर हमें भारत की अनगिनत वीर नारियों की कथाएं मिल जाएंगी। भारत ऐसी वीरांगनाओ का सदैव ऋणी रहेगा और जब-जब भारत की अस्मिता व स्वाभिमान की बात आएगी इन वीरांगनाओं को सदैव स्मरण किया जाएगा।

सभी ज्ञात-अज्ञात वीरांगनाओं को मेरे भावपूर्ण शब्दसुमन अर्पित-

मातृभूमि हेतु सर्वस्व न्योछावर कर दिखाया।
सतीत्व की रक्षा कर भारत माँ का मान बढ़ाया।।
ऋणी रहेगा भारत सदैव ऐसी वीरांगनाओं का।
जिन्होंने अद्भुत शौर्य और पराक्रम दिखलाया।।

संघ की पहली अग्नि परीक्षा

14 अगस्त 1947 को श्रीनगर के डाकघर पर मुस्लिम बलवाइयों ने पाकिस्तानी झंडा फहरा दिया। संघ के स्वयंसेवकों ने व्यवस्था बनाकर न केवल उस झंडे को उतारा बल्कि रातों-रात सैकड़ों तिरंगे झंडे संघ कार्यालय में तैयार कर लोगों में वितरित किए, इसी का प्रभाव था कि 15 अगस्त की सुबह श्रीनगर के अधिकांश घरों और दुकानों पर भारत का तिरंगा लहरा रहा था।

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

संघ यात्रा शृंखला में इस बार हम बात करेंगे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीसरे दशक 1945 से 1955 तक की यात्रा की। अब तक संघ भारतीय जनमानस के हृदय में स्थापित हो चुका था। गांधी जी द्वारा चलाए गए 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जनमानस के साथ हजारों स्वयंसेवक भी जुटे थे लेकिन आन्दोलन को अपेक्षित सफलता नहीं मिली थी। इसके पूर्व 1940 में लाहौर में मुस्लिम लीग द्वारा 'पाकिस्तान प्रस्ताव' पारित किए जाने के पश्चात भारत के मुस्लिम वर्ग की मानसिकता भी कट्टर मजहबी रूप ले चुकी थी। 1946 में मुस्लिम लीग द्वारा डायरेक्ट एक्शन डे की घोषणा के फलस्वरूप कोलकाता में हिन्दुओं का भारी नरसंहार किया गया। ऐसे में पीड़ित हिन्दू समुदाय की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जमीनी स्तर पर कार्य किया। मजहब के आधार पर मातृभूमि के विभाजन की चर्चा होने लगी थी। 3 जून 1947 को कांग्रेस ने विभाजन का अप्रत्याशित निर्णय ले लिया। श्री गुरुजी ने प्रत्येक स्वयंसेवक को इस कठिन परिस्थिति में मातृभूमि और विधर्मियों से अपने हिन्दू भाई-बहनों की रक्षा के लिए कमर कसने का आह्वान किया। 15 अगस्त 1947 को देश स्वाधीन होने के साथ ही खंडित भी हो गया। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में दंगे भड़क उठे, हिन्दुओं की रक्षा के लिए स्वयंसेवक अपने प्राणों की परवाह किए बिना दंगाग्रस्त क्षेत्रों में जुटे। 10 सितंबर 1947 को मुस्लिम लीगियों द्वारा दिल्ली में हिन्दू अधिकारियों व मंत्रियों की हत्या की योजना को संघ के स्वयंसेवकों ने सरदार पटेल और नेहरू को समय पर सूचना देकर विफल किया था। अंग्रेजों ने देश विभाजन के बाद देशी राज्यों को पाकिस्तान या भारत किसी में भी शामिल होने की छूट दे दी थी, इसे लेकर कश्मीर के हिन्दूपरायण राजा हरि सिंह दुविधा में पड़ गए थे क्योंकि उनके राज्य के मार्ग इत्यादि पाकिस्तानी क्षेत्र से जुड़े थे। ऐसे समय में प्रांत संघचालक प्रेमनाथ डोगरा ने महाराजा से मिलकर उनसे भारत में विलय के लिए अनुरोध किया। संघ स्वयंसेवकों के जनजागरण द्वारा महाराजा के पास कश्मीर और आस-पास के राज्यों से भारत में विलय हेतु हजारों टेलीग्राम भेजे गए। 14 अगस्त को श्रीनगर के डाकघर पर मुस्लिम बलवाइयों ने पाकिस्तानी झंडा फहरा दिया। संघ के स्वयंसेवकों ने व्यवस्था बनाकर न केवल उस झंडे को उतारा बल्कि रातों-रात सैकड़ों तिरंगे झंडे संघ कार्यालय में तैयार कर लोगों में वितरित किए, इसी का प्रभाव था कि 15 अगस्त की सुबह श्रीनगर के अधिकांश घरों और दुकानों पर भारत का तिरंगा लहरा रहा था। सरदार पटेल ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए श्री गुरूजी को महाराजा से वार्ता करने को कहा और 17 अक्टूबर 1947 को श्री गुरुजी विमान द्वारा श्रीनगर पहुंचे और महाराजा हरि सिंह को भारत के साथ विलय हेतु सहमत किया। कश्मीर पर कब्जे की नीयत से 23 अक्टूबर को पाकिस्तानी सेना ने कबाइलियों के भेष में कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। ऐसे समय में संघ के स्वयंसेवकों ने पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों का डटकर सामना किया, इसके साथ ही 500 स्वयंसेवकों ने जम्मू हवाई पट्टी को चौड़ा करने का

तात्कालिक कार्य किया जिसके कारण भारतीय सेना के डकोटा विमान वहां उतर सके। मीरपुर में फंसे हजारों हिन्दुओं के जीवन और सम्मान की रक्षा करते-करते जम्मू के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। इस दौरान भारतीय सेना का सहयोग भी किया।

राष्ट्रवादी पत्रकारिता के उद्देश्य से 1947–48 में संघ की प्रेरणा से 'राष्ट्रधर्म' और 'पांचजन्य' पत्रों की स्थापना हुई।

1948 तक राजनीतिक विद्वेष के चलते संघ की बढ़ती शक्ति को तत्कालीन कांग्रेसी नेता अपने लिए एक बड़ी चुनौती मानने लगे थे। उसी समय 30 जनवरी 1948 को दुर्भाग्यपूर्ण रूप से महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। यहां यह बात ध्यान देने की है कि गांधी जी की हत्या से एक दिन पहले ही 29 जनवरी 1948 को पंडित नेहरू ने अमृतसर में कहा था कि, 'हम संघ को जड़ मूल से नष्ट करके ही रहेंगे।' श्री गुरुजी ने स्वयं और संघ के प्रांत स्तर के नेताओं ने अपने-अपने स्तर पर गांधी जी की हत्या की निंदा की और बयान दिए। शोक हेतु शाखाओं के दैनिक कार्यक्रम 13 दिनों के लिए स्थगित कर दिए गए। स्वयंसेवकों द्वारा नागपुर में भी शोक सभा का आयोजन किया गया। संघ विरोधियों ने गांधी जी की हत्या को एक अवसर के रूप में देखा और षड्यंत्रपूर्वक गांधी जी की हत्या में संघ समर्थक व्यक्ति के सम्मिलित होने का झूठा प्रचार किया। 1 फरवरी को श्री गुरुजी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 4 फरवरी 1948 को संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। बीस हजार स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। प्रधानमंत्री नेहरू ने बिना जांच-पड़ताल भाषण देना प्रारंभ कर दिया कि संघ गांधी जी का हत्यारा है। हजारों स्वयंसेवकों ने अत्याचार सहते हुए लंबे समय तक सत्याग्रह किया और गिरफ्तारियां दीं। एक लंबी न्यायिक प्रक्रिया के बाद संघ इस मिथ्या आरोप से निर्दोष सिद्ध हुआ।

इस बात के भी साक्ष्य उपलब्ध हैं कि सरदार पटेल चाहते थे कि संघ जैसा राष्ट्रवादी एवं राष्ट्रभक्त संगठन कांग्रेस में सम्मिलित होकर उनके हाथ मजबूत करे। सरदार पटेल ने प्रतिबंध हटाने की एक शर्त के रूप में यह बात श्री गुरुजी के समक्ष भी रखी थी जिसे श्री गुरुजी ने अस्वीकार कर दिया था।

प्रतिबंधकाल में संघकार्य में व्यवधान उत्पन्न हुआ था किन्तु इस अग्नि परीक्षा से संघ और अधिक निखर गया। श्री गुरुजी के मार्गदर्शन में संघकार्य पुनः द्रुत गति से आगे बढ़ने लगा।

26 जनवरी 1950 को देश गणतंत्र बन गया, श्री गुरुजी ने सभी स्वयंसेवकों को इस पर्व को मनाने का निर्देश दिया। मार्च 1950 में प्रथम अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा बैठक आयोजित हुई। इसी वर्ष असम में आई बाढ़ और भूकंप में भी स्वयंसेवकों ने राहत कार्य किया। पंडित नेहरू ने 1950 में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के साथ एक संधि की, जिसे उनके मंत्रिमंडल के सदस्य डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दू हितों के साथ विश्वासघात मानकर अपना त्यागपत्र दे दिया। 1950 में पूर्वी बंगाल और आज के बांग्लादेश में रह रहे हिन्दुओं का भयंकर नरसंहार हुआ, बड़ी संख्या में हिन्दू जान बचाकर पश्चिम बंगाल और असम में आ गए। कांग्रेस का रुख देख डॉ. मुखर्जी समझ चुके थे कि कांग्रेस के स्वभाव में ही मुस्लिम तुष्टिकरण है। बाद में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का श्री गुरुजी के साथ चिंतन-मनन हुआ और इसके परिणामस्वरूप भारतीय अस्मिता, इतिहास, धर्म-संस्कृति मूल्यों और परंपरा में निष्ठा रखने वाले राजनीतिक दल के रूप में 21 अक्टूबर 1951 को भारतीय जन संघ की स्थापना हुई। सितंबर 1952 में देश के नागरिकों एवं विभिन्न संगठनों ने व्यापक गोवध बंदी आंदोलन किया, जिसमें संघ की बड़ी भूमिका थी। पूरे देश में जन जागरूकता के लिए श्री गुरुजी स्वयं स्थान-स्थान पर जाकर जनता को संबोधित करते थे। 7 दिसम्बर 1952 को स्वयंसेवकों द्वारा 85,000 नगरों और गांवों से एकत्र 1,75,39,813 हस्ताक्षरों से युक्त पत्रों को दिल्ली लाया गया और 8 दिसम्बर को देश के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को सौंपा गया। संघ द्वारा किया गया यह व्यापक जनसंपर्क था। वर्ष 1952 में ही वनवासी क्षेत्र में सेवा कार्य करने हेतु वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना भी की गई। 23 जून को संदेहास्पद स्थिति में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की कश्मीर जेल में मृत्यु हो गई। उदित होते जनसंघ के लिए यह बड़ी हानि थी।

स्वाधीनता के बाद भी दादरा नगर हवेली और गोवा जैसे स्थानों को पुर्तगालियों से मुक्त कराने के लिए संघर्ष चालू था। 2 अगस्त 1954 को पुणे के संघचालक विनायक राव आप्टे के नेतृत्व में स्वयंसेवकों ने दादरा और नगर हवेली को पुर्तगालियों से मुक्त कराया। 1955 में गोवा के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी स्वयंसेवकों ने बड़ी भूमिका निभायी। पणजी सचिवालय पर सर्वप्रथम तिरंगा झंडा भी एक स्वयंसेवक ने ही फहराया था। वामपंथियों ने भारतीय श्रमिक वर्ग पर शिकंजा कस लिया था। भारतीय आर्थिक चिंतन को केंद्र में रखकर वरिष्ठ कार्यकर्ता दत्तोपंत ठेंगडी ने 1955 में श्रमिकों के मध्य कार्य करने हेतु भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की। इस शृंखला में इतना ही, अगली कड़ी में चर्चा करेंगे संघ के अगले दशक की यात्रा की।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का श्री गुरुजी के साथ भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों को लेकर चिंतन-मनन होता था। इसी का परिणाम था कि 21 अक्टूबर 1951 को भारतीय अस्मिता, इतिहास, धर्म-संस्कृति, मूल्यों और परंपरा में निष्ठा रखने वाले राजनीतिक दल के रूप में भारतीय जनसंघ का उदय हुआ।

आपदा में देवदूत बन जाते हैं स्वयंसेवक

मेरी दृष्टि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मानव समाज के विकास और राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध है। संघ मशीन या आधुनिक यंत्र अथवा औजार नहीं तैयार करता है बल्कि राष्ट्र निर्माण के लिए सशक्त व्यक्ति तैयार करता है। व्यक्ति निर्माण का यह कार्य विगत 99 वर्ष से अनवरत चल रहा है।

संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 विजयदशमी के शुभ अवसर पर हुई थी। तभी से संघ ने फर्श से अर्श तक की लंबी यात्रा तय की है। संघ के स्वयंसेवकों ने चाहे वह दैवीय आपदा हो अथवा राष्ट्र सेवा का अन्य कोई कार्य, अपना योगदान पूरी क्षमता के अनुसार राष्ट्र सेवा में समर्पित किया है। संघ के स्वयंसेवक बिना किसी स्वार्थ के नर सेवा को नारायण सेवा मानकर विषम परिस्थितियों में कार्य करते रहे हैं।

मैंने संघ के स्वयंसेवकों को कभी विचलित होते नहीं देखा। उन्हें सदैव धैर्य के साथ समस्या का समाधान समाज को जोड़कर करते पाया है। राष्ट्रभक्ति से युक्त संघ एक चलता-फिरता विश्वविद्यालय है। यह बगैर इंटरनेट के समान विचारधारा के राष्ट्रभक्तों का संगम स्थल है। मैं ऐसा महसूस करता हूं कि जो हम सामान्य स्कूल कॉलेज में के.जी. से पी. जी. और डॉक्टरेट तक नहीं सीख पाते, संघ शाखा और संघ परिवार के वरिष्ठ जनों के समीप रहकर उनके उद्बोधन और अनुभव से सीख लेते हैं।

संघ के स्वयंसेवक भारतीय संस्कृति और नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के लिए आदर्श जीवन पद्धति के अनुसरण को बढ़ावा देते हैं। मैंने देखा है कि संघ की शाखाओं में स्वयंसेवक नियमित रूप से शरीरिक व्यायाम करते हैं, देश, समाज और धर्म पर चिंतन-मनन करते हैं।

आपदा के समय स्वयंसेवक लोगों के बीच देवदूत बनकर पहुंच जाते हैं। उन्होंने 1971 के उड़ीसा के चक्रवात तथा 1977 के आंध्र प्रदेश के चक्रवात में जो राहत और बचाव कार्य किया, दुनिया ने उसकी खुले दिल से सराहना की। जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के दौरान प्रभावित बच्चों, महिलाओं के पुनर्वास और उत्थान के लिए भी स्वयंसेवक जुटे थे। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान संपूर्ण देश में स्वयंसेवकों ने प्रभावित एवं पीड़ित परिवारों की जमकर सेवा की। संघ ने भारत-चीन युद्ध के दौरान नागरिक कर्तव्यों का पालन करते हुए अभूतपूर्व योगदान दिया। इसके लिए भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने संघ के स्वयंसेवकों को 1963 में 26 जनवरी की परेड में आमंत्रित किया, तब 30 हजार स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में परेड में प्रतिभाग किया था। संघ के कई स्वयंसेवक अपने परिश्रम से ऊंचे-ऊंचे पदों तक पहुंचे हैं जिनकी सूची काफी लंबी है। ये स्वयंसेवक राष्ट्र और समाज की सेवा में निष्ठावान होकर पूरे मनोयोग से जुटे रहे हैं। ऐसे स्वयंसेवकों में भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, गृहमंत्री राजनाथ सिंह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, पूर्व रक्षामंत्री स्व. मनोहर परिकर सहित अनेक मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रतिष्ठित उद्योगपति, शिक्षाविद्, किसान आदि शामिल हैं। लाखों की संख्या में संघ के कार्यकर्ता देश-दुनिया में बगैर प्रचार और दिखावे के चरैवेत-चरैवेति का पालन करते हुए अपनी सेवाएं देते हैं।

मेरा समाज के हर वर्ग को यह सुझाव है कि अवसर मिलने या आमंत्रित होने पर हमें संघ के शीतकालीन शिविर, निवासी वर्ग, बौद्धिक वर्ग, शारीरिक वर्ग में तथा संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में जाकर मार्गदर्शन अवश्य लेना चाहिए, जहां हम 'राष्ट्र हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें' की भावना को सीखते हैं। मैं स्वयं संघ की कार्यप्रणाली से बहुत प्रभावित हूं। मैंने संघ के स्वयंसेवक भारत रत्न नानाजी देशमुख के जीवन से प्रेरणा लेकर बुंदेलखंड स्थित बांदा के जखनी गांव से जल संरक्षण की अलख जगाना शुरू किया जो आज न केवल बुंदेलखंड में बल्कि देश के अन्य हिस्सों में एक आंदोलन का स्वरूप लेता जा रहा है।

संघ एक चलता-फिरता विश्वविद्यालय है। यह बगैर इंटरनेट के समान विचारधारा के राष्ट्रभक्तों का संगम स्थल है। जो हम सामान्य स्कूल कॉलेज में के.जी. से पी.जी. और डॉक्टरेट तक नहीं सीख पाते, संघ शाखा और संघ परिवार के वरिष्ठ जनों के समीप रहकर उनके उद्बोधन और अनुभव से सीख लेते हैं।

पंच परिवर्तन के प्रेरक

हमारे समाज में ही अनेक ऐसे लोग हैं जो अपने छोटे-छोटे प्रयासों से समाज में बड़ा परिवर्तन लाने का कार्य कर रहे हैं। इस शृंखला में आइए मिलते हैं कुछ ऐसे ही बंधुओं से जो किसी न किसी रूप में पंच परिवर्तनों के उत्प्रेरक बनें। ये सभी व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

पर्यावरण

मेरठ जिले के सिकंदरपुर गांव की महिलाओं ने एक समस्या का समाधान कर प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस गांव में लगभग आठ साल पहले तक जल निकासी की समस्या से आए दिन झगड़े की समस्या बनी रहती थी। इसे देखते हुए गांव के 135 परिवार के लोगों ने आपस में बैठकर समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। घरों से निकलने वाले पानी को एकत्र कर गांव की महिलाओं ने घर के आंगन में सब्जियां उगानी शुरू कर दी। अब इस गांव के लोग बाजार से सब्जी नहीं खरीदते हैं। पूरी तरह जैविक खेती से उगाई गई सब्जियों को अपने घरों में उपयोग करने के साथ शेष सब्जियों को बेचकर ये महिलाएं लाभ भी अर्जित कर रही हैं। इस तरह इस गांव की महिलाओं ने जल संरक्षण, स्वच्छता और हरियाली के साथ ही नारी सशक्तीकरण का संदेश दिया है।

सामाजिक समरसता

नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन मेरठ, सेवा भारती तथा एकल अभियान के सहयोग से महानगर में मातादीन वाल्मीकि सेवा यात्रा के तहत 1 दिसम्बर को 42 सेवा बस्तियों में निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। इसमें सेवा बस्ती के 6556 मरीजों की जांच कर निःशुल्क परामर्श और दवायें वितरित की गईं। नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन के अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान को 'मातादीन वाल्मीकि स्वास्थ्य सेवा यात्रा' के रूप में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इन शिविरों में नगर के जाने माने 254 चिकित्सकों तथा 464 पैरामेडिकल स्टाफ ने अपनी सेवाएं दीं। शिविर में अनेक बीमारियों की जांच की गई। अभियान को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह विभाग संघचालक विनोद भारती के मार्गदर्शन में चलाया गया। अभियान की व्यवस्था में 800 स्वयंसेवकों ने सहयोग किया।

'स्व'

शिक्षा और स्वाध्याय 'स्व' से जुड़ने का एक बहुत सरल माध्यम है। आजकल मोबाइल युग में बच्चों और युवाओं की स्वाध्याय के प्रति रुचि कम होती जा रही है, स्वाध्याय नहीं तो 'स्व' का जागरण कैसे होगा? इसी का समाधान खोजते-खोजते ग्रेटर नोएडा के बम्बावड गांव के रहने वाले शिक्षक डॉ. अजयपाल नागर पिछले चार वर्षों से एक अनोखी पहल को चला रहे हैं। वे ग्रामीणों के सहयोग से शुरू किए गये पुस्तकालयों से भावी पीढ़ी का भविष्य संवार रहे हैं। उनकी इस मुहिम में देशभर से सौ से अधिक अधिकारी, इंजीनियर, वकील के साथ ही अन्य पेशेवर लोग जुड़े हुए हैं। 2020 के कोरोना काल में गाजियाबाद जिले की लोनी तहसील के छोटे से गांव गनौली से शुरू हुई इस मुहीम ने चार वर्षों में देश के सात राज्यों में 1600 से अधिक पुस्तकालय खोलकर असंभव को संभव कर दिखाया है। यह सभी पुस्तकालय समाज के दान-सहयोग से चल रहे हैं। 'स्व' के बोध से युक्त नई पीढ़ी के निर्माण हेतु इस टीम के द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान अनेक लोगों के लिए प्रेरक उदाहरण है।

नागरिक कर्तव्य

भारत की संस्कृति में दान का बहुत महत्त्व है। भारतीय समाज में अनेक प्रकार के दान की परम्परा है। नोएडा के रहने वाले पवन यादव ने भी भारतीय संस्कृति की दान परम्परा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग बना लिया है। वे देश के प्रति अपने नागरिक कर्तव्य का पालन करते हुए पिछले 24 वर्षों से निरंतर रक्तदान कर रहे हैं। आज नोएडावासी उन्हें 'ब्लड डोनर मैन' के नाम से पुकारते हैं। पवन यादव बताते हैं कि साल 1998 में उन्होंने हॉस्पिटल में एक महिला को रक्त की कमी के कारण तड़पते देखा तब उन्होंने उसके लिए रक्तदान किया और उसके बाद से रक्तदान का संकल्प ले लिया। तब से वे प्रत्येक तीन माह पर रक्तदान करते हैं। वे व्हाट्सएप ग्रुप और सोशल मीडिया के माध्यम से यह सेवाकार्य कर रहे हैं। जिसको भी ब्लड की जरूरत है उनसे मोबाइल नम्बर 8010027949 पर संपर्क कर सकते हैं। उनके पास अस्पताल के जरूरी कागजात होने चाहिए और उनके घर के किसी सदस्य ने रक्तदान किया हो।

कुटुंब प्रबोधन

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में एक ऐसा संयुक्त परिवार है जिसमें परिवार के चार पीढ़ी के 75 सदस्य एक ही छत के नीचे एक साथ मिलकर रहते हैं। आस-पास के क्षेत्र में लोग इस संयुक्त परिवार की मिसाल देते हैं। गोरखपुर के चौरी-चौरा विधानसभा के राजधानी नामक गांव में पूर्व प्रधान छत्रधारी यादव का 75 सदस्यीय परिवार पिछले 5–6 दशक से एक साथ रहता आ रहा है। अपनी परम्परागत भारतीय ग्रामीण विरासत को परिवार ने आज के युग में भी संजोकर रखा है। वह बहुत गर्व के साथ बताते हैं कि उनके घर का चूल्हा एक मिनट भी नहीं बुझता है। क्योंकि, इतना बड़ा परिवार है इस वजह से दिन भर कुछ न कुछ बनता रहता है। घर की सभी महिलाएं आपस में बेहतर सामंजस्य बिठाकर एक दूसरे के काम में हाथ बंटाती हैं। घर के कुछ सदस्य प्रधानाचार्य, अध्यापक हैं, जबकि कुछ बच्चे बी.टेक. और बी.फार्मा. किए हुए हैं। भारतीय जीवन पद्धति और देश की परम्पराओं और पूर्वजों की विरासत को सहेजने का सभी सदस्यों को गर्व है।

एक राष्ट्र एक चुनाव : एक परिचय

प्रशांत त्रिपाठी
अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली

'एक राष्ट्र, एक चुनाव' का विचार लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक ही साथ कराने का प्रस्ताव प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य चुनाव प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करना, इसमें लगने वाले खर्च को घटाना और लगातार चुनावों के कारण सरकारी कामकाज में होने वाले व्यवधानों को कम करना है।

भारत का लोकतांत्रिक ढांचा अपनी जीवंत चुनावी प्रक्रिया के लिए प्रसिद्ध है। यह नागरिकों को हर स्तर पर शासन को आकार देने में सक्षम बनाता है। लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाने के मसले पर लंबे समय से बहस चल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस विचार का समर्थन कर इसे आगे बढ़ाया है। इस विषय पर चुनाव आयोग, नीति आयोग, विधि आयोग और संविधान समीक्षा आयोग भी विचार कर चुके हैं। अभी हाल ही में विधि आयोग ने देश में एक साथ चुनाव कराए जाने के मुद्दे पर विभिन्न राजनीतिक दलों, क्षेत्रीय पार्टियों और प्रशासनिक अधिकारियों की राय जानने के लिए तीन दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया था। इस गोष्ठी में कुछ राजनीतिक दलों ने इस विचार से सहमति जताई, जबकि ज्यादातर राजनीतिक दलों ने इसका विरोध किया। उनका कहना है कि यह विचार लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विरुद्ध है। जाहिर है कि जब तक इस विचार पर आम राय नहीं बनती तब तक इसे धरातल पर उतारना संभव नहीं होगा।

स्वतंत्रता के बाद से अब तक लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के 400 से अधिक चुनावों ने निष्पक्षता और पारदर्शिता के प्रति भारत के चुनाव आयोग की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है। हालांकि, अलग-अलग और बार-बार होने वाले चुनावों की प्रकृति ने एक अधिक कुशल प्रणाली की आवश्यकता पर चर्चाओं को भी जन्म दिया है। इससे 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की अवधारणा में फिर से रुचि जग गई है।

'एक राष्ट्र, एक चुनाव' का विचार लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक ही साथ कराने का प्रस्ताव प्रस्तुत करता है। इससे मतदाता अपने निर्वाचन क्षेत्रों में एक ही दिन सरकार के दोनों स्तरों के लिए अपने मत डाल सकेंगे, जिसे कई चरणों में कराया सकता है। इसका उद्देश्य चुनाव प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करना, चुनाव खर्च को घटाना और लगातार चुनावों के कारण सरकारी कामकाज में होने वाले व्यवधानों को कम करना है।

भारत में एक साथ चुनाव कराने के संबंध में उच्च स्तरीय समिति की रिपोर्ट को 2024 में जारी किया गया था। रिपोर्ट ने एक साथ चुनाव के दृष्टिकोण को लागू करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की। इसकी सिफारिशों को 18 सितम्बर 2024 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकार किया गया, जो चुनाव सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रक्रिया के समर्थकों का तर्क है कि इस तरह की प्रणाली प्रशासनिक दक्षता को बढ़ा सकती है, चुनाव संबंधी खर्चों को कम कर सकती है और नीति संबंधी निरंतरता को बढ़ावा दे सकती है।

भारत सरकार ने 2 सितम्बर 2023 को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के साथ, 'एक राष्ट्र, एक चुनाव का विचार एक बार पुनः भारत के राजनीतिक परिदृश्य में उपस्थित किया है।

केंद्र सरकार के अनुसार देश के लिए यह कोई नया कॉनसेप्ट नहीं है। 1951–52 में देश के प्रथम चुनाव से लेकर 1967 तक देश

में लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ ही कराए गए थे। 1968 और 1969 में कुछ राज्यों की विधानसभा के कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व ही भंग हो जाने पर यह क्रम टूट गया। इसके बाद से केंद्र और राज्यों के लिए अलग-अलग चुनाव आयोजित होते हैं। 2018 में, विधि आयोग ने एक साथ चुनावों के कार्यान्वयन का समर्थन करते हुए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें आयोग ने सुझाव दिया कि संविधान में उपयुक्त संशोधन होंगे और कम से कम 50 प्रतिशत राज्यों को इन संवैधानिक संशोधनों की पुष्टि करनी होगी।

विश्व के कई देशों ने चुनावी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए 'एक देश, एक चुनाव' के मॉडल को अपनाया है। अमेरिका में चुनाव प्रक्रिया की शुरुआत प्राथमिक चुनावों से होती है, यहां राजनीतिक दल आम चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों का चयन करते हैं जो चार साल के अंतराल पर कराए जाते हैं। यह चुनाव नवंबर के पहले मंगलवार को होते हैं। चुनावी प्रक्रिया के तहत मतदाता राष्ट्रपति, कांग्रेस के सदस्यों, राज्यपालों, राज्य विधायकों और स्थानीय अधिकारियों सहित विभिन्न संघीय, राज्य और स्थानीय कार्यालयों के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं जो उम्मीदवार बहुमत हासिल करता है, वो राष्ट्रपति बन जाता है।

फ्रांस भी देश में चुनाव कराने के लिए कुछ इसी तरह का दृष्टिकोण अपनाता है। यहां हर पांच साल में एक साथ राष्ट्रपति और संसद के निचले सदन के चुनाव कराए जाते हैं। यहां मतदाता एक ही मतदान प्रक्रिया के तहत राज्य के प्रमुख और उनके प्रतिनिधियों दोनों का चुनाव करते हैं।

स्वीडन में भी संसद और स्थानीय सरकार के लिए आम चुनाव हर चार साल में एक साथ आयोजित कराए जाते हैं। वहीं नगरपालिका और काउंटी परिषद् चुनाव, राष्ट्रीय चुनावों के साथ होने से मतदाताओं को एक ही दिन में कई चुनावी प्रक्रियाओं में शामिल होने का मौका देती है।

वहीं कनाडा 'एक देश, एक चुनाव' प्रणाली का सख्ती से पालन नहीं करता है।

2018 में, विधि आयोग ने एक साथ चुनावों के कार्यान्वयन का समर्थन करते हुए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। आयोग ने सुझाव दिया कि इसके लिए संविधान में उपयुक्त संशोधन होंगे और कम से कम 50 प्रतिशत राज्यों को इन संवैधानिक संशोधनों की पुष्टि करनी होगी।

यहां हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुनाव हर चार साल में कराए जाते हैं ।

भारत में कार्यान्वयन :- एक साथ चुनाव कराने के लिए संविधान में संशोधन करने के अतिरिक्त, चुनावी व्यवस्था में बदलाव के संबंध में राजनीतिक सहमति बनाने की भी आवश्यकता होगी।

एक राष्ट्र एक चुनाव के कार्यान्वयन के लिए संसद के सदनों की अवधि से संबंधित अनुच्छेद 83, राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा के विघटन से संबंधित अनुच्छेद 85, राज्य विधानसभाओं की अवधि से संबंधित अनुच्छेद 172, राज्य विधानसभाओं के विघटन से संबंधित अनुच्छेद 174, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 में परिवर्तन सहित अनेक परिवर्तन करने होंगे। एक साथ चुनाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए, चुनाव आयोग की शक्तियों तथा कार्यों का पुनर्गठन भी करना होगा।

एक राष्ट्र एक चुनाव के पक्ष में तर्क -

♦ 'एक देश एक चुनाव,' से चुनावी लागत में कमी आएगी।

♦ मतदान प्रतिशत में वृद्धि होगी।

♦ सुरक्षा बलों को आंतरिक सुरक्षा हेतु बेहतर तरीके से तैनात किया जा सकेगा।

♦ बार-बार होने वाले चुनाव, देश भर में जाति, धर्म और सांप्रदायिक मुद्दों को चर्चा में रखते हैं, जिसमें कमी आएगी।

♦ राजनीतिक वर्ग चुनावी लाभों के स्थान पर दीर्घकालिक कार्यक्रमों और नीतियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

♦ शिक्षकों सहित लोक सेवकों की चुनावी ड्यूटी के कारण आवश्यक सेवाओं के वितरण में बाधा नहीं आएगी।

♦ आदर्श आचार संहिता के बार-बार लागू होने से नई योजनाओं, नियुक्तियां, स्थानांतरण और पोस्टिंग जैसे कार्यों में अवरोध उत्पन्न नहीं होगा।

एक राष्ट्र एक चुनाव के विपक्ष में तर्क

♦ इस तरह के विचार-विमर्श से, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की संघीय प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

♦ राष्ट्रीय चुनावों राष्ट्रीय हित से, जबकि राज्य चुनाव स्थानीय विषयों से सम्बंधित होते हैं ऐसे में राष्ट्रीय मुद्दे राज्य के मुद्दों पर हावी हो सकते हैं।

♦ सभी चुनावों के एक साथ सम्पन्न होने के कारण सरकार की जनता के प्रति प्रतिबद्धता में कमी आएगी।

♦ यह सरकार की निरंकुश प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है।

♦ लोकतंत्र में एक साथ सभी चुनाव कराना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य होगा, पहली बार तो लोकसभा और संबंधित राज्यों की विधानसभाओं के कार्यकाल को संशोधित करके सभी चुनाव, एक साथ सम्पन्न कराए जा सकते हैं, लेकिन जैसे ही कोई सरकार विधानसभा में विश्वास खो देती है, यह व्यवस्था फिर से अस्त-व्यस्त हो जाएगी।

♦ वर्तमान व्यवस्था लोकतंत्र की इच्छा बनाये रखती है, लोग मतदान के अधिकार के माध्यम से अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति कर सकते हैं।

इस प्रकार यह सुनिश्चित है कि एक साथ चुनाव का विषय संविधान के संघीय ढांचे और देश की लोकतांत्रिक प्रणाली से संबंधित है, इसलिए इससे जुडी चिंताओं और इसके क्रियान्वयन से सम्बंधित संशय/बाधाओं आदि ठीक से समझने हेतु इस विषय पर सभी राजनीतिक दलों के मध्य परस्पर उचित रूप से मंथन, चर्चा और विमर्श की आवश्यकता है।

संघ के विरुद्ध गांधी हत्या का राग क्यों अलापती रहती है कांग्रेस?

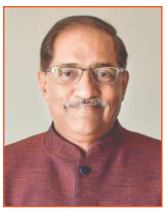

रतन शारदा
संघ विचारक एवं लेखक

1947 में ही संघ को कुचलने की भाषा का प्रयोग शुरू हो गया था। इसका एकमात्र कारण था कि परम पूजनीय गुरुजी और संघ की बढ़ती लोकप्रियता ने नेहरू जी और उनके पिछलग्गुओं तथा वामपंथियों को बेचैन करना शुरू कर दिया था।

पहले तो हम यह बात अच्छी तरह जान लें कि गांधी हत्या में संघ का कोई हाथ नहीं, यह संघ नहीं, बल्कि न्याय व्यवस्था द्वारा स्थापित सत्य है। गांधी हत्या के एक महीने के भीतर सीआईडी के अफसर श्री संजीवी ने अपनी रिपोर्ट सरदार पटेल को भेजी जिसमे उन्होंने स्पष्ट लिखा कि इस हत्या में संघ का कोई हाथ नहीं है। यहां तक कि उन्होंने यह भी कहा कि मिठाई हिन्दू महासभा के तरुणों ने बांटी थी, संघ के स्वयंसेवकों ने नहीं। यह रिपोर्ट सरदार पटेल ने नेहरू जी से भी साझा की थी। दुर्भाग्य से उस समय की राजनीति के माहौल में इस रिपोर्ट को दबा दिया गया था और कई वर्षों बाद यह फाइल बाहर आई थी। न तो हत्या करने वाले आरोपियों ने संघ का नाम लिया, न ही पुलिस रिपोर्ट में संघ का उल्लेख था। न्यायालय ने भी संघ के बारे में कोई भी टिप्पणी नहीं की थी। स्वर्गीय रंगाहरि जी ने श्री गुरुजी के जीवन चरित्र में इन सारे तथ्यों को उजागर किया है। इतना ही नहीं, कई वर्षों बाद श्रीमती इंदिरा गांधी ने खोसला कमिटी का गठन किया। परंतु उस कमिटी ने भी संघ की भूमिका पर कोई नकारात्मक टिप्पणी नहीं की।

इन सब तथ्यों के बावजूद कांग्रेस संघ पर गांधी हत्या में शामिल होने का आरोप लगाती रही है। जब कुछ मानहानि के दावे कुछ नेताओं पर किए गए, तो उन्होंने शब्दों का खेल खेलते हुए हिन्दुत्व की विचारधारा के कारण, जो संघ फैलाता है, उस विचारधारा को दोषी ठहराना शुरू कर दिया।

क्या है इस मानसिकता का कारण?: 1947 में ही संघ को कुचलने की

भाषा का प्रयोग शुरू हो गया था। इसका एकमात्र कारण था कि परम पूजनीय गुरुजी और संघ की बढ़ती लोकप्रियता ने नेहरू जी और उनके पिछलग्गुओं तथा वामपंथियों को बेचैन करना शुरू कर दिया था।

स्मरण रहे कि स्टालिन के इस बयान से प्रेरित होकर कि "यह आजादी भारत की वास्तविक आजादी नहीं है, यह तो बुरजुआ शक्तियों के लिए स्वतंत्रता है, सर्वहारा समाज की नहीं", कम्युनिस्ट लोगों ने आंध्र प्रदेश (अब तेलंगाना राज्य) में सशस्त्र क्रांति का युद्ध प्रारंभ कर दिया था। उसे कुचलने के लिए अंततः फौज का सहारा लेना पड़ा था। 1951 में कुचले जाने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रजातन्त्र को स्वीकार किया था। पाठकों को स्मरण रहे कि कम्युनिस्ट नेता अधिकारी ने 1943 में यह विचार रखा था कि भारत कभी एक राष्ट्र था ही नहीं, वह 16 राष्ट्रों का एक समूह है। 1946 में कम्युनिस्ट पार्टी ने केबिनेट मिशन को यह ज्ञापन दिया कि इस राष्ट्र के 16 विभाजन करके तथाकथित राष्ट्र को स्वतंत्रता दी जाए। हिन्दुत्व और राष्ट्रीयत्व से घृणा करने वाले कम्युनिस्टों का संघ से स्वाभाविक बैर था, अतः उन्होंने भी इसी असत्य का सहारा लेकर हिन्दुत्व और संघ की छवि बिगाड़ने के लिए और इस विचारधारा को दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

कांग्रेस के नेता इस चिंता से कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कहीं राजनीति में उनका प्रतिद्वंदी न बन जाए, उसे रोकने के उपाय सोचने लगे। 1947 में महाराष्ट्र में संघ का एक प्रांत स्तरीय शिविर आयोजित किया गया था, जिसमे एक लाख स्वयंसेवक भाग लेने वाले थे। सरदार पटेल भी आने वाले थे। परंतु महाराष्ट्र कांग्रेस इकाई ने कानून व्यवस्था का हवाला देते हुए दबाव डालकर इस शिविर को रद्द करवा दिया। इसी प्रांत की इकाई ने एक प्रस्ताव अनुमोदित किया कि संघ को बंद किया जाए वरना 'हम 1942 के तरीके से संघ को नेस्तनाबूद कर देंगे।' मुख्य मंत्री बी. जी. खेर ने उन्हें समझाया कि ऐसे आप संगठन को समाप्त नहीं कर सकते। कांग्रेस अखिल भारतीय कमिटी ने फिर संघ को दबाने का ऐसा प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उत्तर प्रदेश कांग्रेस सरकार ने संघ के स्वयंसेवकों पर दंगे करने के झूठे आरोप लगा कर अपना प्रयत्न जारी रखा, परंतु अंत में ये आरोप भी कोर्ट में नहीं चले। कहने का तात्पर्य है कि कांग्रेस के नेताओं में अत्यंत बेचैनी थी कि किसी भी तरह संघ को रोका जाए। एक तो संघ उनकी सेक्युलर नीतियों के नाम पर मुस्लिम तुष्टीकरण के प्रयोग के विरुद्ध खड़ा था। दूसरे हिन्दू सुरक्षा के कार्य के कारण वह अत्यंत लोकप्रिय था। BBC के अनुसार नेहरू जी के बाद सबसे लोकप्रिय नेता श्री गुरुजी थे।

गांधी हत्या के कुछ दिन पहले नेहरू जी ने सार्वजनिक रूप से कहा कि 'मैं संघ को कुचल दूंगा'। दूसरी ओर सरदार पटेल ने संघ के पक्ष में सार्वजनिक सभा में कहा था कि ये तरुण देश भक्त लोग हैं। इसी आपसी विरोधी विचारों के बीच महात्मा गांधी जी की हत्या हो गई। बिल्ली के भाग से भगोना फूटा और संघ पर बंदी लगा दी गई। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र ने अपनी जीवनी में स्पष्ट लिखा है, कि कांग्रेस ने गांधी हत्या का दुरुपयोग करते हुए, संघ को कुचलने के कुत्सित प्रयास किए।

इस लेख में संघ पर से बंदी हटाने के लिए किए गए श्री गुरुजी के प्रयास और सत्याग्रह के बारे में नहीं लिखूँगा। परंतु संघद्वेष सर्व विदित हो गया था। अंततः बिना शर्त संघ बंदी हटानी पड़ी, शर्त मात्र यह थी कि संघ अपने संगठन का लिखित संविधान दे। विचित्र बात यह है कि कांग्रेस का भी 14 वर्ष तक कोई लिखित संविधान नहीं था!

1950 से 1973 तक के काल में संघ के मूक रहने और हिन्दु, हिन्दुत्व विद्रोही तत्वों ने संघ को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हर प्रकार से प्रहार किए गए। कभी गांधी हत्या के नाम पर तो कभी 'हिन्दुत्व घृणापूर्ण विचार है' इत्यादि कह कर।

इस संघर्ष काल से, उसके पहले 15 अगस्त 1947 के आसपास की घटनाओं के कारण संघ की शक्ति क्षीण हुई थी। कई स्वयंसेवक भ्रमित थे। उस परिस्थिति में श्री गुरुजी ने दृढ़ता के साथ संगठन फिर खड़ा करना प्रारंभ किया। उनका आग्रह था कि हम किसी निंदा का उत्तर देने में अपनी शक्ति व्यय न करें, बल्कि पूरी शक्ति संघ विस्तार और सशक्तीकरण में लगा दें। 1950 से श्री गुरुजी के 1973 में स्वर्गवास तक संघ अविरत रूप से बढ़ा, कई राष्ट्रीय संगठन खड़े हुए और समाज में संघ की ग्राह्यता भी बढ़ी।

परंतु 1950 से 1973 तक के काल में संघ के मूक रहने और हिन्दु, हिन्दुत्व विद्रोही तत्वों ने संघ को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हर प्रकार से प्रहार किए गए। कभी गांधी हत्या के नाम पर तो कभी 'हिन्दुत्व घृणापूर्ण विचार है' इत्यादि कह कर। बौद्धिक, प्रसार माध्यम हर जगह यह खेल चलता रहा। संघ में तो प्रचार विभाग 1990 के आस-पास बना और धीरे-धीरे संघ ने इस प्रसार माध्यम के युद्ध को सीखना शुरू किया। इस प्रकार हिन्दुत्व और राष्ट्रीयत्व विरोधी शक्तियों को 40 वर्ष खुला मैदान मिला। सभी तरह के नैतिकता के नियम तोड़ते हुए, सभी तथ्यों के विरुद्ध यह षड्यन्त्र चले। गांधी हत्या मात्र एक पर्दा है जिसके पीछे से संघ को रोकने के द्वेषपूर्ण प्रयत्न चलते रहे हैं। परंतु अब इस कुप्रचार को जनता अस्वीकार कर चुकी है। यह स्मरण रहे कि "गोडसे कभी संघ के स्वयंसेवक थे, इसलिए संघ दोषी है" (जबकि 1932 में ही गोडसे संघ से अलग हो गए थे, क्योंकि इसका "नर्म" काम उन्हें पसंद नहीं था।); यदि इस युक्ति को माना जाए, तो जिन्ना भी कई वर्ष कांग्रेस के नेता रहे थे, इसलिए रक्तरंजित विभाजन और लाखों हिन्दुओं की हत्या, करोड़ों का बेघर होने के लिए कांग्रेस को ही दोषी मानना चाहिए।

सत्य कभी झुकता नहीं, हारता नहीं।

बांग्लादेशी हिन्दुओं की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव आवश्यक

डॉ. अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

सर्वविदित है कि बांग्लादेश भारत की सहायता से बना था। वर्ष 1971 के पहले यह पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था। पाकिस्तान के शासक अपने ही देश के इस पूर्वी इलाके के सहधर्मियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। उनकी स्थिति दोयम दर्जे के पाकिस्तानी नागरिकों वाली थी। वे खुलकर स्वयं को पाकिस्तानी नहीं कह सकते थे। बांग्लादेशी नेता शेख मुजीबुर्रहमान ने इसी हालात के चलते विद्रोह किया था और तब भारत की सहायता से एक स्वतंत्र देश के रूप में बांग्लादेश अस्तित्व में आया।

बांग्लादेश में जिस तरीके से हिन्दुओं, उनके व्यावसायिक और धार्मिक स्थलों पर अनवरत क्रूर हमले किए जा रहे हैं, उसने भारत में मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा किए गए अत्याचारों की याद दिला दी है। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज उसी बांग्लादेश द्वारा हिन्दू समुदाय के लोगों को निशाना बनाया जा रहा है जो भारत के अपार सहयोग से ही अस्तित्व में आया था। हालांकि भारत सरकार ने हिन्दुओं पर कट्टरपंथियों द्वारा किये जा रहे हमलों पर सख्त विरोध दर्ज कराया है लेकिन मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बांग्लादेश सरकार इसको लेकर गंभीर नहीं दिख रही।

ढाका में इस्कॉन के धर्म गुरु चिन्मय कृष्ण दास की एक मनगढ़ंत आरोप में गिरफ्तारी और उसके बाद इस्कॉन मंदिर में की गई तोड़-फोड़ और आगजनी पर बांग्लादेश के समक्ष भारत ने अपनी आपत्ति व्यक्त की, लेकिन इससे उसकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा। इसके विपरीत बांग्लादेश ने स्वामी चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी को अपना आंतरिक मामला बता दिया। प्रश्न यह है कि क्या बांग्लादेश को इसकी अनुमति दी जानी चाहिए कि वह हिन्दुओं के उत्पीड़न से आंखें मूंदे रहे? राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकारों की आवाज उठाने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी आज मौन क्यों हैं? अगर बांग्लादेश भारत की आपत्ति को गंभीरता से नहीं ले रहा है तो भारत का अगला कदम क्या होना चाहिए?

यह बात स्पष्ट है कि अल्पसंख्यकों का गंभीर उत्पीड़न किसी देश का आंतरिक मामला नहीं हो सकता। बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के बाद से हिन्दू सहित अन्य अल्पसंख्यक कट्टरपंथियों के निशाने पर हैं। उन्हें केवल आतंकित ही नहीं किया जा रहा है बल्कि उनके धार्मिक स्थलों व्यावसायिक ठिकानों पर इस उद्देश्य से हमले किए जा रहे हैं कि वे अपना घर-बार छोड़कर भाग जाएं।

सर्वविदित है कि बांग्लादेश भारत की सहायता से बना था। वर्ष 1971 के पहले यह पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था। पाकिस्तान के शासक अपने ही देश के इस पूर्वी इलाके के सहधर्मियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। उनकी स्थिति दोयम दर्जे के पाकिस्तानी नागरिकों वाली थी। वे खुलकर स्वयं को पाकिस्तानी नहीं कह सकते थे। शेख मुजीबुर्रहमान ने इसी हालात के चलते विद्रोह किया था और भारत की सहायता से बांग्लादेश एक स्वतंत्र देश बना।

आज हिन्दू संपूर्ण विश्व में एक शक्ति बनकर उभरा है। अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन में हिन्दुओं की अच्छी खासी आबादी है। उनके पास बुद्धि, कौशल और पैसा है। वर्तमान में हिन्दुओं की तीस वर्ष पहले वाली स्थिति नहीं रही है। आज इन देशों की राजनीति और अर्थव्यवस्था में हिन्दुओं का दखल है। अब भारतवंशियों की सशक्त मौजूदगी दुनिया में भारत का झंडा बुलंद कर रही है। 1947 में भारत विभाजन के बाद अस्तित्व में आये पाकिस्तान के हिन्दुओं को विदेशी कहना अनुचित होगा। लेकिन यह सच है कि पाकिस्तान का जन्म मजहबी उन्माद और घृणा से हुआ था इसलिए पहले तो उन्होंने हिन्दुओं को भारत जाने को विवश किया। परंतु जब वे नहीं गए तो उन पर ऐसे कानून थोपे, जो हर तरह से उनकी अस्मिता के खिलाफ थे। पश्चिमी पाकिस्तान से तो अधिकांश हिन्दू भारत में आ गए लेकिन पूर्वी पाकिस्तान से लगभग 20 प्रतिशत हिन्दू आबादी ने वहीं रहने का निर्णय किया। लेकिन धीरे-धीरे पाकिस्तान के इस पूर्वी भाग के कट्टरपंथियों ने उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया।

1947 से 1960 के बीच हजारों हिन्दू अत्याचार और उत्पीडन के चलते पाकिस्तान से भारत आ गए। पाकिस्तान के श्रम मंत्री जोगेंद्र नाथ मंडल भी पाकिस्तान छोड़ कर भारत आ गए। जोगेंद्र नाथ मंडल ने तत्कालीन प्रधानमंत्री लियाकत अली खान से पाकिस्तान में दलितों और अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ हिंसा रोकने का आग्रह किया परंतु उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। इसके विरोध में जोगेंद्र नाथ मंडल ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया और वापस भारत आ गए।

धीरे-धीरे पश्चिमी पाकिस्तान के हिन्दू भी भारत लौटने लगे और वर्ष 1971 में जब पाकिस्तान में स्वतंत्र बांग्लादेश बनाने का आंदोलन चला तब पाकिस्तान की याह्या खान सरकार ने वहां हिन्दुओं का भारी उत्पीड़न किया। हिन्दुओं को सहज निशाना बनाकर मारा गया, लेकिन भारत की तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार की मदद से पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान मुक्त हो गया और एक स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश बना। इसके बावजूद कट्टरपंथी तत्वों ने हार नहीं मानी और 1975 में बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या कर दी। इस कठिन परिस्थिति में भी उदारवाद की बेल नष्ट नहीं हुई और शेख मुजीबुर्रहमान की बेटी शेख हसीना ने अपने पिता की पार्टी का नेतृत्व संभाला। वह 1996 से 2001 तक पहली बार देश की प्रधानमंत्री रहीं। वह दोबारा 2009 में प्रधानमंत्री चुनी गईं और 2024 तक इस पद पर रहीं। किंतु विकट राजनीतिक परिस्थितियों के चलते अपनी जान बचाने हेतु 5 अगस्त को उन्हें बांग्लादेश छोड़कर भारत में शरण लेनी पड़ी।

शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट होने के बाद मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने तमाम कट्टरपंथियों और यहां तक कि जिहादियों को भी जेल से रिहा कर दिया है। उन्होंने ऐसे कई अतिवादी संगठनों को भी राहत दी है, जिन पर शेख हसीना सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा था।

शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट होने के बाद मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने तमाम कट्टरपंथियों और यहां तक कि जिहादियों को भी जेल से रिहा कर दिया है। उन्होंने ऐसे कई अतिवादी संगठनों को भी राहत दी है, जिन पर शेख हसीना सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा था। सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण है कि अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार कहे जाने वाले मोहम्मद यूनुस हिन्दुओं पर अनगिनत हमलों को बांग्लादेश के खिलाफ आधारहीन दुष्प्रचार करार दे रहे हैं। हालांकि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सहित कई देशों के नेता हिन्दुओं पर हमले को लेकर चिंता व्यक्त कर चुके हैं।

ध्यातव्य है कि बांग्लादेश में इस्कॉन मंदिर वाले शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग के करीबी थे। यह बात यूनुस सरकार और कट्टरपंथियों को खटकती है। उन्हें लगता है कि इस्कॉन के अनुयायी शेख हसीना की पुनर्वापसी का रास्ता बना रहे हैं। वर्ष 1971 में बांग्लादेश में जहां 20 प्रतिशत हिन्दू थे वहीं अब उनकी संख्या घटकर महज 8 प्रतिशत रह गई है। इसके अतिरिक्त अवामी लीग का अपना वोट बैंक है। वहां उदारपंथी लोग अवामी लीग को पसंद करते हैं। अवामी लीग सरकार ने ही बांग्लादेश को एक सेकुलर गणतंत्र बनाया था, जबकि खालिदा जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी ने इसे इस्लामिक गणतंत्र का स्वरूप दिया था। वहां की यूनुस सरकार और कट्टरपंथी मिलकर येन-केन-प्रकारेण अवामी लीग का विध्वंस करना चाहते हैं। यही कारण है कि कटटरपंथी हिन्दुओं का नरसंहार कर रहे हैं और सरकार इस्कॉन मंदिर और उनके साधुओं की धर-पकड़ कर रही है। मोहम्मद यूनुस इन इस्लामिक कट्टरपंथियों के हाथों की कठपुतली बने हुए हैं। बांग्लादेश आर्थिक रूप से तबाह हो रहा है। निर्यात घटा है और कर्ज बढ़ा है।

आज जिस तरीके से बांग्लादेश में हिन्दुओं और अल्पसंख्यकों पर अमानवीय अत्याचार हो रहा है, वह रोंगटे खड़ा करने वाला है। आज बांग्लादेश भारत सरकार द्वारा दर्ज कराए जाने वाले विरोध को गंभीरता से नहीं ले रहा है। ऐसे में भारत सरकार को इस मामले में अपनी रणनीति बदलते हुए अत्यंत सख्त रवैया अपनाने की आवश्यकता है। साथ ही भारत में अल्पसंख्यकों पर उत्पीड़न और मानवाधिकारों की दुहाई देने वाले तथाकथित राष्ट्रीय एवं अतंरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बुद्धिजीवियों को मानवता के हित में बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाने के लिए आंदोलन छेड़ना चाहिए ताकि बांग्लादेश में हिन्दुओं सहित अन्य अल्पसंख्यकों के जीवन और अस्मिता की रक्षा की जा सके।

मकर संक्रांति : प्रकृति और परंपरा का समन्वय

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

मकर संक्रांति का पर्व प्रकृति में बदलाव का संवाहक है। हमारी सनातन संस्कृति में पृथ्वी और ब्रह्मांड की सौर गतिविधियों का अद्भुत समन्वय है जिनका हम विभिन्न पर्व और त्यौहारों के माध्यम से आभार प्रकट कर सांस्कृतिक विविधता और परंपरा का उत्सव मनाते आए हैं।

संगीत में आत्मा को सुकून देने की क्षमता होती है। इसलिए लोगों को संगीत के प्रति जागरूक करने के लिए हिन्दू धर्म में संगीत महोत्सवों का आयोजन किया जाता रहा है। माह भर चलने वाले सबसे बड़े वार्षिक सांस्कृतिक संगीत उत्सव 'मद्रास संगीत महोत्सव' का समापन 15 जनवरी को होगा। इस महोत्सव में पारंपरिक नृत्य, दक्षिण भारतीय संगीत और संगीत से जुड़ी गोष्ठियां, प्रदर्शन और चर्चाएं होती हैं। इन गतिविधियों की संख्या 1000 से अधिक होती है। 3 से 9 जनवरी तक चेन्नई में 18 वें नृत्य महोत्सव का आयोजन है। इसी क्रम में 6 जनवरी को सिख धर्म के दशम गुरू गोविंद सिंह जी का जन्मोत्सव दुनिया भर के गुरुद्वारों में मनाया जायेगा।

वहीं मकर संक्रांति के अवसर पर विशेष रूप से गंगा सागर मेला, बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में गंगा सागर पर मनाया जाता है, जहां गंगा मैया सागर में विलीन होती हैं। यहां मकर संक्रांति पर गंगा मैया में पवित्र डुबकी लगाने के लिए देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु गंगासागर पहुंचते हैं।

12 जनवरी स्वामी विवेकानन्द जयंती को राष्ट्रीय युवा महोत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है। 11 से 14 जनवरी तक साबरमती रिवरफ्रंट अहमदाबाद में अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव में शामिल होने देश-दुनिया के पतंगबाज आते हैं। मकर संक्रांति पर देश भर में पतंगें उड़ाई जाती हैं। अमृतसर में छोटी पतंग को गुड्डी कहते हैं और बड़ी पतंग को गुड्डा कहते हैं। पंजाब प्रान्त के लोहड़ी पर्व पर पतंगबाजी देखने लायक होती है। इसी क्रम में लोहड़ी की अग्नि उत्साह और हर्ष की अग्नि बनकर सभी को ढोल की थाप पर नाचने के लिए आमंत्रित करती है। रात को सरसों का साग और गन्ने के रस की खीर जरूर बनती हैं, जिसे अगले दिन मकर संक्रांति पर खाया जाता है। इसके लिए कहते हैं 'पोह रिद्दी माघ खादी' अर्थात् पौष के महीने में बनाई और माघ के महीने में खाई। इस तरह लोहड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। कड़ाके की सर्दी में आग के पास ढोलक की थाप पर उत्सव के अवसरों पर गाये जाने वाले आंचलिक लोकगीत नई पीढ़ी को भारत की जीवंतता से परिचित कराते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक परम्परा से सुरक्षित है। अगले दिन मकर संक्राति पर निर्धन एवं वंचित वर्ग को खिचड़ी, तिल और आवश्यक वस्तुओं का दान किया जाता है। सहारनपुर के प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर में माँ शाकंभरी देवी उत्सव आयोजित किया जाता है। इस दिन दूर-दूर से लाखों भक्त यहां माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

वर्ष 2025 में तो विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन महाकुंभ महापर्व मेला तीर्थराज प्रयागराज में 13 जनवरी से आयोजित होने जा रहा है। जहां शैव, शाक्त, वैष्णव सहित सनातन धर्म के सभी पंथों-मतों के साधु-संन्यासी और 13 अखाड़े सम्मिलित होते हैं। कुम्भ में नये संन्यासियों को दीक्षा दी जाती है। देश-दुनिया के करोड़ों लोग कुम्भ स्नान के साथ वहां साधनारत साधु-संतों और महात्माओं के दर्शन कर इनके चरणस्पर्श कर शुभाशीष लेना अपना सौभाग्य समझते हैं। मकर संक्रांति के अवसर पर ही महाकुम्भ का प्रथम शाही स्नान होगा।

मकर संक्रांति पर ही पूर्वोत्तर भारत में भोगाली बिहू मनाते हैं। यह उत्सव एक सप्ताह

तक मनाया जाता है। इस अवसर पर स्थानीय लोग एक दूसरे को गमुछा (गमछा) भेंट करके प्रणाम करते हैं साथ ही चिड़वा, दही और गुड़ खाया जाता है। हुरुम (परमल), नारियल, तिल के लड्डू बनते हैं। भोगाली बिहू यानि माघ बिहू में अलाव जलाने, भोज खाने और खिलाने की परंपरा है।

एक सप्ताह तक चलने वाला 'पोंगल पर्व' भारत के दक्षिण में नवान्न और सम्पन्नता लाने वाला महत्वपूर्ण त्यौहार है। इसका इतिहास कम से कम 1000 वर्ष पुराना है। भारत के दक्षिणवासी जन देश-विदेश में जहां भी रहते हैं बड़े उत्साह से पोंगल पर्व मनाते हैं। इस अवसर पर सूर्यदेव को जो प्रसाद अर्पित करते हैं वह पगल कहलाता है। चार दिनों तक चलने वाले पोंगल में वर्षा, धूप, खेतिहर मवेशियों की आराधना की जाती है। जनवरी में चलने वाले पहली पोंगल को भोगी पोंगल कहते हैं जो विलासितापूर्ण देवराज इन्द्र को समर्पित है। दूसरा पोंगल सूर्य देवता को निवेदित सूर्य पोंगल है। मिट्टी के बर्तन में नये धान, मूंग की दाल और गुड़ से बनी खीर और गन्ने के साथ सूर्य देव की पूजा की जाती है। तीसरा मट्टू पोंगल है, तमिल मान्यताओं के अनुसार मट्टू भगवान शंकर का नंदी हैं जिसे उन्होंने पृथ्वी पर हमारे लिए अन्न पैदा करने को भेजा है। इस दिन बैल, गाय और बछड़ों को सजाकर उनकी पूजा की जाती है। कहीं-कहीं इसे कनु पोंगल भी कहते हैं। बहनें अपने भाइयों की खुशहाली के लिए पूजा करती हैं। भाई उन्हें उपहार देते हैं। चौथे दिन कानुम पोंगल मनाया जाता है। इस दिन दरवाजे पर तोरण बनाए जाते हैं। महिलाएं मुख्य द्वार पर रंगोली बनाती हैं। लोग नये कपड़े पहनते हैं। रात को सामुदायिक भोज होता है। तमिल तन्दनान रामायण के अनुसार भगवान राम ने मकर संक्रांति को पतंग उड़ाई थी और उनकी पतंग इन्द्रलोक में चली गई थी। उसकी स्मृति में अब लोग सागर तट पर पतंग उड़ाते हैं और सूर्यदेव का आशीष ग्रहण करते हैं।

त्यौहारों की शृंखला में टुसू महोत्सव झारखंड के वनवासियों और जनजातियों का

महत्वपूर्ण पर्व है। इसे एक महीने तक नृत्य और आंचलिक गीतों व कर्मकांडों के साथ मनाया जाता है। पर्व के अंतिम दिन मकर संक्रांति को इस लोक उत्सव में सुबह नदी में स्नान कर उगते सूर्यदेव की प्रार्थना की जाती है और कुंवारी कन्याओं द्वारा बनाई टुसू देवी की मूर्ति एक माह तक प्रतिदिन सायंकाल पूजने के बाद विसर्जित कर दी जाती है।

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के प्रसिद्ध तमिल कवि एवं दार्शनिक तिरूवल्लुर के सम्मान में 15 जनवरी को तिरूवल्लूर दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जयदेव केंडुली 15 जनवरी को कवि जयदेव की जयंती पर, पश्चिम बंगाल के केंडुली गांव में संगीत मेला आयोजित किया जाता है। जो घूमंतू गायकों द्वारा बाउल संगीत के लिए प्रसिद्ध है। इसी तरह मोढ़ेरो नृत्य महोत्सव गुजरात के मेहसाणा जिले में स्थित प्राचीन मोढ़ेरा सूर्य मंदिर में मनाया जाने वाला शास्त्रीय नृत्य उत्सव है। यह संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने वाला उत्सव पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है। इसके अलावा प्रसिद्ध योगी तैलंग स्वामी जयंती और 23 जनवरी को महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती 'पराक्रम दिवस' के रूप में पूरा देश मनाता है।

मकर संक्रांति के माध्यम से पवित्र भारत भूमि के कोने-कोने में भारतीय सभ्यता-संस्कृति एवं लोक परम्पराओं की झलक हमें विविध रुपों में दिखाई देती है।

26 जनवरी को भारतीय जनमानस अपने सम्प्रभुत्व सम्पन्न गणतंत्र के राष्ट्रीय पर्व को मनाता है। इसी दिन तमिलनाडु के मदुरै में भक्ति और संस्कृति को दर्शाता फ्लोट उत्सव मनाया जाता है। भगवान सुन्दरेश्वर और देवी मीनाक्षी की मूर्तियों को विशेष शृंगार करके फूलों और प्रकाश से सज्जित फ्लोट पर रख कर मरियम्मन तेप्पाकुल्लम तालाब में चारों ओर घुमाया जाता है। इसका दर्शन करने दूर-दूर से श्रद्धालु पहुंचते हैं। मकर संक्रांति पर ही पंडालम राजमहल से भगवान अयप्पा के आभूषणों को संदूक में रख कर एक भव्य शोभा यात्रा निकाली जाती है जो 90 किलोमीटर की दूरी तय कर तीन दिन में सबरीमाला धाम पहुंचती है।

प्रत्येक वर्ष होने वाला नागौर महोत्सव राजस्थान की धरती पर रंग बिखेरता है जहां पशुओं के साथ-साथ हस्तशिल्प और आभूषणों की जमकर खरीदारी होती है। तीन महीने का रण उत्सव भी इस समय चल ही रहा है।

मौनी अमावस्या के दिन माँ गंगा स्नान या अपने आस-पास की पवित्र नदी या सरोवर में स्नान करने के साथ भगवान विष्णु की पूजा कर दान देने की परम्परा है। इस अमावस्या को मौन व्रत रखा जाता है इसलिए इसे मौनी अमावस्या कहा जाता है। इस प्रकार मकर संक्रांति के माध्यम से पवित्र भारत भूमि के कोने-कोने में भारतीय सभ्यता-संस्कृति एवं लोक परम्पराओं की झलक हमें विविध रुपों में दिखाई देती है।

प्रेरणा विमर्श -2024 की झलकियां

पर्यावरण

प्रेरणा विमर्श - 2024 के द्वितीय दिवस 23 नवम्बर को प्रथम सत्र में पंच परिवर्तन में से एक 'पर्यावरण' पर मंथन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पर्यावरणविद् एवं जल योद्धा पद्मश्री उमाशंकर पाण्डेय ने वर्तमान वैश्विक जल संकट एवं हमारे पूर्वजों की जल संचयन-प्रबंधन प्रणाली पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण की अनिवार्यता के लिए सबको जागरूक किया। मुख्य वक्ता JNU विश्वविद्यालय की प्रो. ऊषा मीणा ने पर्यावरण के प्रति उपेक्षा से उपज रही वैश्विक समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि पर्यावरण और परिवेश का संतुलन बनाए रखना सरकार का नहीं अपितु प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। इसके लिए हमें अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करना होगा।

कुटुंब प्रबोधन

प्रेरणा विमर्श - 2024 के द्वितीय दिवस 23 नवम्बर को द्वितीय सत्र में पंच परिवर्तन के दूसरे विषय 'कुटुंब प्रबोधन' पर मंथन हुआ। इस विषय पर प्रबोधन करते हुए मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक सूर्य प्रकाश टोंक ने परिवार का महत्व बताया। भारत की कुटुंब व्यवस्था तथा संगठित परिवार के लिए शिक्षा, संस्कार, संगति, एकात्मकता और समाज में परिवार के महत्व पर विस्तृत चर्चा करते हुए श्रेष्ठ परिवार के पांच सूत्र बताए। मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. वरुण गुलाठी ने भारतीय परिवार संस्था की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए वर्तमान समय में कुटुंब व्यवस्था पर हो रहे आघातों एवं बढ़ते एकल परिवारों के प्रति सचेत किया।

सामाजिक समरसता

प्रेरणा विमर्श-2024 के द्वितीय दिवस 23 नवम्बर को तृतीय सत्र में पंच परिवर्तन के तृतीय विषय 'सामाजिक समरसता' पर मंथन हुआ। मुख्य अतिथि लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता मंजुल पालीवाल ने कहा कि भारतीय समाज में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहा है। समाज में भेदभाव की जो कुरीतियां आई हैं वह बाहरी आक्रमणों के काल में आयी हैं। हमें अपनी सामाजिक कुरीतियों की गलती को स्वीकार कर इन्हें दूर करने और सामाजिक समरसता हेतु स्वयं से, अपने परिवार से शुरुआत करनी होगी। समाज को विभाजित करने वाली देश विरोधी शक्तियों से भी सावधान रहना होगा। मुख्य वक्ता पूर्व लोकसभा सांसद एवं राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष विजय सोनकर शास्त्री ने भारत की संस्कृति में निहित समरसता तत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारत के स्वभाव में जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों, नदियों के लिए भी आदर का भाव है फिर यह कैसे संभव हो सकता है कि हमारा समाज सामाजिक भेदभाव के कुचक्र में फंस गया? भेद का भाव भारत का स्वभाव नहीं है।

'स्व'

प्रेरणा विमर्श - 2024 के तृतीय दिवस 24 नवम्बर को चतुर्थ सत्र में पंच परिवर्तन के चतुर्थ विषय 'स्व' पर मंथन हुआ। मुख्य अतिथि स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सहसंगठक सतीश कुमार ने कहा कि जनमानस को व्यक्तिगत, परिवार और कार्य स्थल पर अपने 'स्व' का बोध होना चाहिए। हमारे चिंतन, संवाद, व्यापार, पारिवारिक संवाद, स्वावलंबन आदि में स्वदेशी का भाव दिखाई देना चाहिए। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार टोली सदस्य मुकुल कानिटकर ने कहा कि स्वाभिमान के साथ अपने 'स्व' का पालन करें। अपनी भाषा, भूषा, भजन, भोजन, भवन और भ्रमण में स्वदेशी अपनाएं। 'धर्म' भारत का प्राण और स्व है। अन्य देशों का लक्ष्य अलग हो सकता है लेकिन भारत के स्वभाव में विश्व गुरु बनने की नियति है और वही लक्ष्य भी, जिसका मार्ग हमारे 'स्व' से होकर जाता है।

नागरिक कर्तव्य

प्रेरणा विमर्श - 2024 के तृतीय दिवस 24 नवम्बर को पंचम सत्र में पंच परिवर्तन के पंचम विषय 'नागरिक कर्तव्य' पर मंथन हुआ। मुख्य अतिथि भारतीय विद्या भवन की प्रो. (डॉ.) शशिबाला ने अपने संबोधन में अधिकारों से पहले कर्तव्य की चर्चा करते हुए कहा कि कर्तव्यों का निर्माण न होने से परिवार टूट रहे हैं। कर्तव्यपरायणता संस्कारों से आएगी। संस्कार हमारे पूर्वजों द्वारा हजारों वर्षों में पोषित की गयी संस्कृति से आते हैं, संस्कृति और संस्कारों का संरक्षण और संपोषण हमारा कर्तव्य है। मुख्य वक्ता उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व डीजीपी एवं वर्तमान राज्यसभा सांसद बृज लाल ने भारतीय संविधान की मूल भावना और नागरिक कर्तव्यों की चर्चा करते हुए कहा कि हम संविधान की रक्षा करें और उसके निर्देशों का पालन करें। उन्होंने समाज में पैर पसारती संस्कारविहीनता पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि भारत का इतिहास कभी कमजोर नहीं था। देश के संघर्ष, देश के बलिदानियों और महान पूर्वजों से प्रेरणा लेना भी हमारा कर्तव्य है।

डिजिटल मार्केटिंग में स्वर्णिम भविष्य

अदिति सिंह
छात्रा, लॉ
दिल्ली मेट्रोपोलिटन एजुकेशन

नई और बेहतर तकनीक के आगमन के साथ, दुनिया भर में व्यक्ति, संस्थान, संगठन और विभिन्न कंपनियों में ऑनलाइन उपस्थिति के लिए होड़ लगी है। इसलिए आज डिजिटल मार्केटिंग सभी व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है, चाहे वह व्यवसाय बड़ा हो या छोटा। विभिन्न उपकरणों का उपयोग करके और विभिन्न रणनीतियों को मिलाकर, डिजिटल मार्केटिंग ने व्यक्तियों और कंपनियों को वह शक्ति प्रदान की है, जो पहले उनके पास पारंपरिक रूप से नहीं होती थी। इसलिए डिजिटल मार्केटिंग का दायरा सीमाओं से परे काफी विस्तृत है। आज हर कोई अपने प्रोडक्ट या सर्विस की मार्केटिंग ऑनलाइन तरीके से यानी सोशल मीडिया के माध्यम से कर रहा है। ऐसे में उसे एक डिजिटल विशेषज्ञ की जरूरत होती है क्योंकि जीवन की अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति डिजिटल माध्यम से हो रही हैं। समयाभाव के कारण आज हर कोई घर बैठे पढ़ाई, शॉपिंग, जॉब, ब्रॉन्डिंग सब कुछ ऑनलाइन यानी डिजिटल माध्यम के जरिए कर रहा है। इसलिए आने वाला टाइम डिजिटल क्रांति का है। इसकी पुष्टि होती है आंकड़ों से। आंकड़ों के मुताबिक भारत में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या 954.40 मिलियन से अधिक है। वहीं विश्व भर में लगभग 6 बिलियन लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। ऐसे में डिजिटल मार्केटिंग का दायरा और तेजी से बढ़ना निश्चित है। इसलिए सभी क्षेत्रों में कुशल डिजिटल मार्केटर्स की मांग और बढ़ेगी, बस जरूरत है डिजिटल मार्केटिंग में महारत हासिल करके इस क्षेत्र से जुड़ने की।

आने वाला टाइम डिजिटल क्रांति का है। इसकी पुष्टि होती है आंकड़ों से। आंकड़ों के मुताबिक भारत में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या 954.40 मिलियन से अधिक है। वहीं विश्व भर में लगभग 6 बिलियन लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। ऐसे में डिजिटल मार्केटिंग का दायरा और तेजी से बढ़ना निश्चित है।

इस फील्ड में करियर बनाने के लिए आप 12वीं के बाद 3 से लेकर 6 महीने का डिप्लोमा कोर्स करके भी शुरुआत कर सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग के कई सर्टिफिकेशन कोर्स गूगल कम्पनी भी कराती है। इसके अलावा आप डिजिटल मार्केटिंग में तीन साल का ग्रेजुएशन और 2 साल का पोस्ट ग्रेजुएशन भी कर सकते हैं। इसके लिए आईआईएम, अहमदाबाद, बेंगलुरु, लखनऊ, निफ्ट कोलकाता आदि संस्थानों में एडमिशन लेकर डिजिटल मार्केटिंग के विशेषज्ञ बन सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग में सोशल मीडिया, मोबाइल, ईमेल, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन, यू ट्यूब आदि का इस्तेमाल कर मार्केटिंग के तरीके बताए जाते हैं। इस तरह डिजिटल मार्केटिंग में उत्पाद और सेवाओं की मार्केटिंग करने के लिए मोबाइल फोन्स, डिस्प्ले एड्वरटाइजिंग, रेडियो एड्वरटाइजिंग, ई-मेल मार्केटिंग जैसी कई डिजिटल तकनीकों का प्रयोग कर विस्तार करना सिखाया जाता है।

डिजिटल मार्केटिंग में अवसर : इस तरह आप डिजिटल मार्केटिंग का कोर्स करके मार्केटिंग असिस्टेंट, वेब डिजाइनर, डिजिटल कॉपी एडिटर, कंटेंट मैनेजर, मार्केटिंग मैनेजर और क्रिएटिव मैनेजर के रूप में करियर की शुरुआत कर सकते हैं। इसके अलावा डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ, सोशल मीडिया प्रबंधक, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन विशेषज्ञ, डिजिटल मार्केटिंग सलाहकार, सामग्री मार्केटर, ई-कॉमर्स विशेषज्ञ के रूप में अवसरों की भरमार है।

इस तरह आज 10 सबसे ज्यादा मांग वाली नौकरियों में से एक है डिजिटल मार्केटिंग। इसलिए डिजिटल मार्केटिंग को करियर के रूप में चुनने से आपके लिए अवसरों की भरमार रहेगी। साथ ही इसमें घर बैठे यानी कहीं से भी काम करने का विकल्प और फ्लेक्सिबल टाइम के साथ बेहतर सैलरी पैकेज भी है। इसलिए डिजिटल मार्केटिंग में विशेषज्ञता हासिल करके आप देश-विदेश में अपने सपनों को पंख लगा सकते हैं।

MAHARAJA AGRASEN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
APPROVED BY AICTE | AFFILIATED TO GGSIPU
INAUGURATED BY H'BLE SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE, 10TH PRIME MINISTER OF INDIA
www.mait.ac.in
MAIT
Years of Excellence
All eligible B.Tech programmes are NBA Accredited B.Tech (CSE, ECE, EEE, IT, MAE.)
PROF. MAHESH VERMA
VICE-CHANCELLOR, GGSIPU
SHRI JAGDEEP DHANKHAR
VICE-PRESIDENT OF INDIA
ACHIEVEMENTS
50+ Gold Medalists
20+ Selections in UPSC
1000+ Research Papers & Patents Published and Granted annually
Placement in Top Notch Companies
10000+ Students From Delhi/NCR
Rs. 27 Lacs+ worth Multiple Consultancy Projects
400+ Top Corporate Recruiters
1.22 Cr. Highest Package
50+ MoUs International & National
75+ High-Tech Labs & Computer Labs
20000+ Alumni Trust Base
B.Tech. (CSE, ECE, MAE, IT and EEE) Accredited by
NATIONAL BOARD of ACCREDITATION
Band 201-300, 2024
nirf
NATIONAL INSTITUTIONAL RANKING FRAMEWORK
RANKED
4th
Best College (Private)
INDIA TODAY
15th
Top Engineering (Pvt) Colleges
MRDA SURVEY 2024
Rank 8 (Overall)
Rank 2 (Private)
Rank 5 (North Zone)
DATAQUEST 2024
Brand Promising Ranking
ARIIA
DR. NAND KISHORE GARG
FOUNDER & CHIEF ADVISOR
SH. VINEET KUMAR LOHIA
CHAIRMAN
MAIT HIGHLIGHTS
Many Prestigious Awards: ISTE, 2024 Jagran Achievers Award; 2024 ASHRAE SBA Award, National Employability Award; North India Education Leadership Award 2023; AAAA by Career 360, 2024.
ISO 9001: 2015 (2022-2025) Certified
National & International Projects of worth more than Rs 2 Crores from ASHRAE, India-Russia Joint Research, DST, AICTE, DRDO, Society of Microelectronics and VLSI etc.
International MoUs: USA, Germany, Japan,
MAIT Promotes Social Activities: Donated Rs 2 Cr for Sh. Ram Janam Bhoomi, PM Care Fund, PM Relief fund etc.
Hackathon Winners at National and International Levels
COURSES OFFERED
B.TECH (CSE)
B.TECH (CSE AI)
B.TECH (CSE Data Science)
B.TECH (CSE AI-ML)
B.TECH (CST)
B.TECH (IT)
B.TECH (ITE)
B.TECH (ECE)
B.TECH (EC- VLSI)
B.TECH (EC- ACT)
B.TECH (EEE)
B.TECH (MAE)
B.TECH (ME)
BBA & MBA
MAHARAJA AGRASEN TECHNICAL EDUCATION SOCIETY
MATES is a Charitable trust and has established the following higher Education Ventures :-MAIT, MAIMS, MAU and MABS
SISTER CONCERNS
MAHARAJA AGRASEN INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
UGC AUTONOMOUS STATUS
ACCREDITED A++ By NAAC
www.maims.ac.in | Rohini, New Delhi
MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY(H.P.)
Inaugurated by Hon'ble Shri Pranab Mukherjee 13th President of India
50+ MoUs & Collaborations with Corporates
NAAC
www.mau.ac.in | Baddi, H.P.
MAHARAJA AGRASEN BUSINESS SCHOOL
Inaugurated by Hon'ble Shri Ram Nath Kovind 14th President of India
Approved by AICTE, Ministry of Education, Govt of India
Academic Partnership with Grant Thornton
www.mabs.ac.in | Rohini, New Delhi
MAIT, PSP Area, Plot No-1, Sector-22, Rohini, Delhi-110086, INDIA | https://mait.ac.in | Contact No. +91-8448186942

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

SURYA

A journey of brilliance completes

SINCE 1973

Surya Roshni has been a beacon of excellence,
illuminating lives with innovation and quality.

Here's to 50+ years of brilliance, and to many more years of lighting up the future together!

LIGHTING | FANS | APPLIANCES | WATER PUMPS | STEEL PIPES | PVC PIPES

I am SURYA | 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

SURYA ROSHNI LIMITED | www.surya.co.in | surya surya_roshni surya.roshni surya-roshni

Email: info@surya.in Tel.: +91-11-47108000